हिन्दी व्याकरण (कक्षा–7)

1 भाषा, लिपि और व्याकरण

➡ बातों-बातों में

1. भाषा हमारे भावों और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है।
2. देश के सरकारी कामकाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा, **राजभाषा** कहलाती है।
3. किसी भी भाषा के वर्णों के लिखने की विधि, **लिपि** कहलाती है।
4. जो भाषा व्याकरण, उच्चारण और शब्दावली की दृष्टि से शुद्ध और सर्वमान्य होती है, **मानक भाषा** कहलाती है।

➡ लिखित में

(क)

1. भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारों का आदान-प्रदान करता है।
2. लिखित भाषा का तात्पर्य है-लिखी हुई भाषा; जैसे- समाचार-पत्र, पुस्तकें, पोस्टर आदि। जबकि मौखिक भाषा का तात्पर्य है-मुख द्वारा बोली जाने वाली भाषा; जैसे- गीत गाना, रेडियो सुनना तथा भाषण आदि।
3. जो भाषा देश के अधिकतर नागरिकों द्वारा प्रयोग में लाई जाती है, उसे **राष्ट्रभाषा** कहते हैं। भारत में लगभग 70 प्रतिशत लोगों द्वारा हिंदी बोली जाती है। अत: हिंदी को भारत की **राष्ट्रभाषा** कहा जा सकता है।
4. स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा का गौरव प्रदान किया गया। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
5. व्याकरण वह शास्त्र है, जिसके द्वारा भाषा के शुद्ध रूप तथा शुद्ध प्रयोग का ज्ञान होता है।

(ख)

1. (ii) भाषा
2. (iii) समाचार-पत्र
3. (i) देवनागरी
4. (iii) फारसी

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✔) 4. (✔) 5. (✗)

(घ) 1. मौखिक, 2. लिपि, 3. हिंदी, 4. शुद्ध।

(ङ)

भाषा	**लिपि**
हिंदी	देवनागरी
बंगाली	बांग्ला
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फारसी
जर्मन	रोमन

➡ सोच-समझ से

1. मौखिक भाषा (बोलकर व्यक्त करना) के उदाहरण हैं— बातचीत, भाषण और टेलीफोन पर बात करना, जबकि लिखित भाषा (लिखकर व्यक्त करना) के उदाहरण हैं— पत्र लिखना और किताबें पढ़ना/लिखना।
2. तमिलनाडु (तमिल), पश्चिम बंगाल (बंगाली), केरल (मलयालम), महाराष्ट्र (मराठी), पंजाब (पंजाबी/हिंदी के साथ)।

➡ कुछ करके देखिए

1. पंजाबी 2. उर्दू
3. सिंधी 4. बंगाली
5. कन्नड़ 6. संस्कृत
7. मराठी 8. नेपाली

✤✤

2 वर्ण-विचार

➡ बातों-बातों में

1. 'अं' तथा 'अ:' को अयोगवाह कहा जाता है।
2. आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ को दीर्घ स्वर कहते हैं।
3. व्यंजन के चार भेद होते हैं— 1. स्पर्श व्यंजन, 2. उत्क्षिप्त व्यंजन, 3. अंत:स्थ व्यंजन, 4. ऊष्म व्यंजन।
4. **संयुक्त व्यंजन—** क्ष, त्र, ज्ञ, श्र। (**क्ष**मा, सर्व**ज्ञ**)

संयुक्ताक्षर— त् +य = **त्य** (**सत्य**, **नित्य**)
स्+व = **स्व** (**स्वार्थ**, **स्वाद**)

➡ लिखित में

1. भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसके टुकड़े या खंड नहीं किए जा सकते, उसे वर्ण या अक्षर कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में वर्ण दो प्रकार के होते हैं—- 1. स्वर, 2. व्यंजन।
2. जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य ध्वनि की सहायता नहीं लेनी पड़ती तथा हवा बिना रुकावट के मुख से बाहर निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं। जिन वर्णों के उच्चारण में ध्वनि मुख के अलग-अलग स्थानों से होकर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इन ध्वनियों का उच्चारण करने के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है।
3. **विसर्ग (:)** का उच्चारण 'ह' की भाँति होता है। विसर्ग का प्रयोग तत्सम शब्दों (संस्कृत से आए) में किया जाता है। जैसे- अतः, प्रातः आदि।
4. जिन वर्णों (ड़, ढ़) के उच्चारण में जीभ झटके के साथ आगे गिर जाती है, उन्हें **उत्क्षिप्त व्यंजन** कहते हैं। इन वर्णों से कोई शब्द शुरू नहीं होता; जैसे— सड़क, पढ़ाई आदि। इसी प्रकार, जिन व्यंजनों का उच्चारण स्वर तथा व्यंजनों के मध्य होता है, उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। इनके उच्चारण में जीभ मुख के किसी भाग को स्पर्श नहीं करती। इनकी संख्या चार है— य, र, ल, व।
5. जब एक जैसे दो व्यंजन एक साथ आते हैं तो उन्हें **द्वित्व व्यंजन** कहते हैं। जैसे—
   ज् + ज = छज्जा, लज्जा
   न् + न = अन्न, भिन्न
   प् + प = ठप्पा, थप्पड़
   ट् + ट = छुट्टी, मिट्टी
   च् +च = बच्चा, सच्चा
6. 1. र् + अ + स् + अ = रस
   2. व् + अ + र् + ष् + आ = वर्षा
   3. अ + ग् + र् + अ = अग्र
   4. र् + आ + ष् + ट् + र् + अ = राष्ट्र

(ख) 1. (i) ञ्, ण्
2. (ii) आ + श्र् + अ + म् + अ
3. (iii) श्, ष्, स्, ह्

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. स्वर, व्यंजन
2. अयोगवाह
3. स्वरों
4. वर्ण-विच्छेद
5. हलंत (्)

(ङ)
1. क् + अं + ग् + आ + र् + ऊ
2. न् + ऋ + प् + अ
3. ई + श् + व् + अ + र् + अ
4. आ + श् + ई + र् + व + आ + द् + अ
5. उ + च् + च् + आ + र् + अ + ण् + अ
6. म् + अ + ह् + अ + ँ + ग् + आ + ई

➡ सोच-समझ से

अनुस्वार— घोंसला, चंदन, पतंग
अनुनासिक— गाँव, आँगन, घरौंदा
हलंत— निम्नवत्, सतत्, अर्थात्
विसर्ग— दुःख, स्वतः, अतः

➡ कुछ करके देखिए

वर्णमाला के क्रम में शब्द

अत्यधिक, आदर्श, आधीन, कवयित्री, गेहूँ, ज्योत्सना, ट्रेन, नाराजगी, पत्नी, पृथ्वी, बीमारी, भौगोलिक, मुकुल, रक्षा, व्यक्ति, शुद्ध, त्रिकोण, ज्ञान, श्रीमती

✤✤

3 शब्द-विचार

➡ बातों-बातों में

1. जब शब्द व्याकरण के नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयोग होता है तो वह पद कहलाता है।
2. रूढ़ शब्द का उदाहरण है—-पानी।
3. प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं— विकारी शब्द और अविकारी शब्द।
4. हिंदी की जननी संस्कृत भाषा है।

➡ लिखित में

1. वर्णों का सार्थक समूह 'शब्द' कहलाता है, जबकि शब्दों का व्याकरण के नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयोग होता है, तो वह 'पद' कहलाता है।
2. जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने होते हैं, परंतु उनका प्रयोग विशेष अर्थ में किया जाता है, **योगरूढ़ शब्द** कहलाते हैं। उदाहरण— मुरलीधर = मुरली + धर = मुरली को धारण करने वाला = श्रीकृष्ण।
3. प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—
   1. **विकारी शब्द—** - जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण वाक्य में विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं— 1. संज्ञा, 2. सर्वनाम, 3. विशेषण, 4. क्रिया।
   2. **अविकारी शब्द—** जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण वाक्य में कोई परिवर्तन नहीं आता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। अविकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं-- 1. क्रिया विशेषण, 2. संबंधबोधक, 3. समुच्चयबोधक, 4. विस्मयादिबोधक।
4. जो शब्द अन्य शब्दों के मेल से बनते हैं, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं। इन शब्दों के खण्ड किए जा सकते हैं। जैसे— विद्यार्थी = विद्या + अर्थी, विद्यालय = विद्या + आलय, दूधवाला = दूध + वाला आदि। लेकिन जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने होते हैं, परंतु उनका प्रयोग विशेष अर्थ में किया जाता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं— जैसे— लंबोदर = लंब + उदर = लंबा है उदर जिसका (गणेश जी)।
   मुरलीधर = मुरली + धर (मुरली को धारण करने वाला) = श्रीकृष्ण।
5. **(i) तत्सम शब्द—** संस्कृत भाषा के वे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे— अग्नि, दुग्ध, चंद्र, कूप आदि।
   (ii) तद्भव शब्द— संस्कृत भाषा के जो शब्द परिवर्तित होकर अपने सरल रूप में हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे— आग, दूध, चाँद, कुआँ आदि।

(ख) 1. (ii) विदेशी 2. (i) अँगूठा 3. (ii) विशेषण

(ग) 1. (×) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. तत्सम, 2. सार्थक, 3. गुसाईं, 4. तीन।

(ङ) 1. उजला 2. कपूर 3. भाप 4. बाँसुरी 5. अरक 6. सेज 7. आँख 8. काजल 9. मिट्टी 10. काम 11. बहरा 12. भौंरा

➡ सोच-समझ से

रूढ़ — जलज, घोड़ा, राजमहल, बात, आँख, कौआ, नाक, राजा

यौगिक— रसोईघर, देशवासी, पीलापन, देशद्रोही, घुड़सवार, विद्यालय, देवालय, सत्यवादी।

योगरूढ़— दशानन, गजानन, चंद्रशेखर, नीलकंठ, गंगा, महादेव, पीतांबर

➡ कुछ करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

✤✤

4 संधि

➡ बातों-बातों में

1. 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि
2. वृद्धिस्वर संधि — वृद्धि संधि
3. रजः + गुण = रजोगुण
4. व्यंजन संधि

➡ लिखित में

1. दो समीपवर्ती वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं; जैसे— हरि + ईश = हरीश।
2. स्वर का स्वर के साथ मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं;

जैसे— सती + ईश = सतीश, जबकि व्यंजन के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने पर उस व्यंजन में होने वाले परिवर्तन को व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे— चित् + आनन्द = चिदानन्द।

3. व्यंजन के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने पर उस व्यंजन में होने वाले परिवर्तन को व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे— दिक् + अम्बर = दिगम्बर, वाक् + ईश = वागीश।
4. (i) मन: + रंजन = मनोरंजन
   (ii) मन: + हर = मनोहर
   (iii) दु: + चरित्र = दुश्चरित्र
   (iv) नि: + पाप = निष्पाप
5. (i) दीर्घ संधि— मत + अनुसार = मतानुसार
   (ii) गुण संधि— स्व + इच्छा = स्वेच्छा
   (iii) वृद्धि संधि— सदा + एव = सदैव
   (iv) यण संधि— इति + आदि = इत्यादि
   (v) अयादि संधि— भौ + उक = भावुक

(ख) 1. (ii) तथा + एव
2. (i) स्वर संधि
3. (i) परमौषध
4. (iii) उत् +ज्वल

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (×) 4. (×) 5. (×)

(घ) 1. मनोहर 2. महोत्सव 3. लोकोक्ति 4. सप्तर्षि 5. पर्यावरण

(ङ) 1. वसंत + ऋतु 2. महा + ऐश्वर्य 3. देवी + आलय 4. सूर्य + अस्त 5. मातृ + आनंद 6. दिक् + गज 7. शरत् + चन्द

➡ सोच-समझ से
1. मन: + बल = मनोबल
2. नि: + चय = निश्चय
3. नि: + संकोच = निसंकोच
4. नि: + शुल्क = नि:शुल्क/निशुल्क
5. नि: + आशा = निराशा

➡ कुछ करके देखिए
छात्र स्वयं करें।

✤✤

5 उपसर्ग तथा प्रत्यय

➡ बातों-बातों में
1. हिंदी में उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं।
2. क्रियाओं के अंत का 'ना' हटाने पर जो अंश बचता है, उसे धातु कहते हैं।
3. कृत् प्रत्यय के योग से बनने वाले शब्द कृदंत कहलाते हैं।
4. आई = बुराई, पन = लड़कपन

➡ लिखित में
(क)
1. जो शब्दांश शब्दों के पहले जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे— उप + वन = उपवन।
2. हिंदी भाषा में उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं— (i) हिंदी के उपसर्ग— अध = आधा = अधमरा, अधपका,
   भर = पूरा = भरपेट, भरपाई
   (ii) संस्कृत के उपसर्ग—
   अति = अधिक = अतिरिक्त, अतिवृष्टि
   अभि = सामने/पास = अभियोग, अभिलाषा
   (iii) आगत उपसर्ग—
   कम = हीन/थोड़ा = कमउम्र, कमख्याल
   गैर = नहीं = गैरहाजिर, गैरकानूनी
   (iv) संस्कृत के अव्यय (उपसर्ग की तरह प्रयोग में आने वाले)-
   अंत: = भीतरी = अंत:करण, अंत:पुर
   स्व = अपना/निजी = स्वदेश, स्वरूप
3. वे शब्दांश जो शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें **प्रत्यय** कहते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं— (i) -कृत् प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय।
4. जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अव्यय के अंत में जुड़ते हैं, उन्हें **तद्धित प्रत्यय** कहते हैं; जैसे— आर = सुनार, लुहार। आस = खटास, मिठास।
5. उपसर्ग की तरह प्रयोग होने वाले दो अव्यय हैं— 'अ' (निषेध/रहित) और 'भर' (पूर्ण), जैसे—-अधपका (अ + पका, आधा पका) और (भरपेट) (भर + पेट, पूरा पेट)।

(ख) 1. (ii) निष् + कपट
2. (i) बरगद

3. (iii) लड़ाकू
4. (iv) फेरा

(ग) 1. (✕) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✕) 5. (✓)

(घ) 1. धोखेबाज, 2. संतरे, 3. गरीबी, 4. आबादी।

(ङ)

1. 'अ' उपसर्ग है। 2. 'कु' उपसर्ग है।
3. 'नि' उपसर्ग है। 4. 'अप' उपसर्ग है।
5. 'निर्' उपसर्ग है। 6. 'ला' उपसर्ग है।
7. 'नि' उपसर्ग है। 8. 'सु' उपसर्ग है।
9. 'दुर्' उपसर्ग है। 10. 'पुनः' उपसर्ग है।

➡ सोच-समझ से

1. अविकास शब्द में 'वि' उपसर्ग है।
2. असमानता शब्द में 'अ' उपसर्ग है और 'ता' प्रत्यय है।
3. समस्याएँ शब्द में 'एँ' प्रत्यय है।
4. निरंतर शब्द में 'निर' उपसर्ग है।
5. प्रयास शब्द में 'प्र' उपसर्ग है।
6. आवश्यकता शब्द में 'ता' प्रत्यय है।
7. स्वदेशी शब्द में 'स्व' उपसर्ग और 'ई' प्रत्यय है।
8. उत्पादों शब्द में 'उत्' उपसर्ग है।
9. आत्मनिर्भर शब्द में 'आत्म' उपसर्ग और 'ईर' प्रत्यय है।
10. श्रमिकों शब्द में 'इक' प्रत्यय है।
11. 'सुधारने' शब्द में 'ने' प्रत्यय है।
12. 'सरकारी' शब्द में 'ई' प्रत्यय है।
13. 'योजनाओं' शब्द में 'ओं' प्रत्यय है।
14. 'प्रचारित' शब्द में 'प्र' उपसर्ग और 'इत' प्रत्यय है।

➡ कुछ करके देखिए

1. -कृत् प्रत्यय—
   अत = बचत, अक = तैराक,
   ओड़ = हँसोड़, औना = खिलौना,
   आवट = लिखावट।
2. तद्धित प्रत्यय—
   आर = सुनार, त = संगत,
   ऐला = विषैला, आल = ससुराल,
   लु = दयालु।

1. अत्याचारी = (अति + आचार + ई)
2. निर्बलता = (निर + बल + ता)
3. अमानवीयता = (अ + मानव + ईय + ता)
4. अपरिपक्वता = (अ + परि + पक्व + ता)
5. अनादरणीय = (अ + आदर + अनीय)

✤✤

6 समास

➡ बातों-बातों में

1. सामासिक शब्द या समस्त पद कहते हैं।
2. पूर्वपद और उत्तरपद कहते हैं।
3. समास के छः भेद हैं।
4. ऊँचा-नीचा, पाप-पुण्य।

➡ लिखित में

1. दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त करके स्वतंत्र शब्द बनाने की विधि को समास कहते हैं; जैसे— पेट भरकर को 'भरपेट' कर दिया जाए।
2.

	समस्तपद	विग्रह
(i) अव्ययीभाव समास	1. यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
	2. बेमतलब	मतलब के बिना
(ii) तत्पुरुष समास -	1. रोगमुक्त	रोग से मुक्त
	2. शक्तिहीन	शक्ति से हीन
(iii) कर्मधारय समास -	1. महात्मा	महान है जो आत्मा
	2. कालीमिर्च	काली है जो मिर्च
(iv) द्विगु समास -	1. पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समूह
	2. त्रिशूल	तीन शूलों का समूह
(v) द्वंद्व समास	1. छोटा-बड़ा	छोटा या बड़ा

	2. अपना-पराया	अपना और पराया
(vi) बहुव्रीहि समास -	1. नीलकंठ -	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिवजी
	2. चतुरानन -	चार हैं आनन जिसके अर्थात् ब्रह्माजी

3. **कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर—** जहाँ कर्मधारय समास में उपमेय-उपमान या विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है, वहीं बहुव्रीहि समास में दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद की ओर संकेत करते हैं।
4. **द्विगु समास तथा बहुव्रीहि समास में अंतर—** द्विगु समास में, पहला पद संख्यावाची विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है; जबकि बहुव्रीहि समास में सम्पूर्ण समस्तपद किसी अन्य संज्ञा के विशेषण का काम करता है।

समस्तपद	**विग्रह**	**भेद**
त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समूह	द्विगु समास
	तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् शिवजी	बहुव्रीहि समास
तिरंगा	तीन रंगों का समूह	द्विगु समास
	तीन हैं रंग जिसमें अर्थात् भारतीय झंडा	बहुव्रीहि समास

(ख) 1. (ii) रोग से मुक्त -- तत्पुरुष समास
2. (iii) बहुव्रीहि समास
3. (iii) बहुव्रीहि समास
4. (i) अव्ययीभाव समास

(ग) 1. (×) 2. (×) 3. (✓) 4. (✓) 5. (×)

(घ) 1. लंबोदर 2. तिरंगा 3. पीतांबर 4. राधा-कृष्ण

(ङ)

		विग्रह	**समास का नाम**
1.	त्रिलोक	तीनों लोकों का समाहार	द्विगु समास
2.	चौराहा	चार राहों का समूह	द्विगु समास
3.	चंद्रशेखर	चन्द्र है शिखर पर जिसके अर्थात् भगवान शिव	बहुव्रीहि समास
4.	देश-विदेश	देश और विदेश	द्वंद्व समास
5.	मुक्तिप्राप्त -	मुक्ति को प्राप्त -	तत्पुरुष समास
6.	वनगमन -	वन को गमन -	तत्पुरुष समास
7.	घनश्याम -	घन के समान श्याम (बादल के समान श्याम) -	कर्मधारय समास
8.	मृत्युंजय -	मृत्यु को जीतने वाला -	बहुव्रीहि समास

➡ सोच-समझ से

हिंदी भाषा में समास का महत्त्व— - भाषा को संक्षिप्त, प्रभावशाली और सुंदर बनाने में है, क्योंकि यह दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नया, छोटा और अर्थपूर्ण शब्द (सामासिक शब्द) बनाता है, जिससे कम शब्दों में अधिक कही जा सके और वाक्य संरचना में स्पष्टता और प्रवाह आता है।

➡ कुछ करके देखिए

1. गंगाजल 2. जलधारा
3. महामठ 4. नीतिनिपुण
5. आजन्म 6. नीलकंठ
7. राधाकृष्ण 8. रामसीता

✤✤

7 शब्द-भण्डार

➡ बातों-बातों में

1. आग — अनल, पावक।
2. बलवान - बलहीन, गतिमान - गतिहीन।
3. उच्छृंखल - नियम - अनुशासन न मानने वाला। अनुपम - जिसकी कोई उपमा न हो।
4. अनुगृह का शुद्ध रूप अनुग्रह है, जाग्रति का शुद्ध रूप जागृति है।

➡ लिखित में

(क)

1. हिंदी भाषा में एक ही भाव अथवा अर्थ को प्रकट करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें **पर्यायवाची शब्द** कहते हैं। जैसे-– आँख = नयन, लोचन, दृग, नेत्र, चक्षु।
2. जो शब्द अनेक संबद्ध शब्दों या वाक्यांश के लिए शीर्षक का कार्य करता है, उसे 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहा जाता है। अपनी किसी भी बात को कम-से-कम शब्दों में कहने का अभ्यास करना चाहिए। इससे भाषा प्रभावशाली होती है।
3. श्रुतिसम-भिन्नार्थक का अर्थ है— सुनने में समान तथा अर्थ में भिन्न अर्थात् जो शब्द सुनने में समान और अर्थ में भिन्न होते हैं, उन्हें श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द कहते हैं; जैसे-–अवधि (समय), अवधी (अवध की भाषा)।
4. हिंदी अत्यन्त समृद्ध और वैज्ञानिक लिपि वाली भाषा है। इसका जैसा उच्चारण किया जाता है, वैसा ही लिखा जाता है; परंतु कभी-कभी उच्चारण की अशुद्धि के कारण शब्दों में अशुद्धियाँ हो जाती हैं और हमारे दिमाग में अशुद्ध शब्द बैठ जाता है। इस कमी को दूर करने के लिए वर्तनी का ध्यान रखना चाहिए।

(ख) 1. (i) सारंग
2. (ii) सुधा
3. (ii) बहुरूपिया
4. (iii) हवन – बुलावा

(ग) 1. (✓) 2. (×) 3. (×) 4. (✓)

(घ) 1. अरी, 2. पानी, 3. बहु, 4. ओर, 5. अन्न।

(ङ)

1. जो अपने कर्तव्य का निश्चय नहीं कर सके।
2. दोपहर के बाद का समय।
3. कम भोजन करने वाला।
4. जो ऋण मुक्त हो गया हो।
5. जो क्षमा पाने योग्य हो।
6. जो जानने की इच्छा रखता है।
7. जो लोक में सम्भव न हो।
8. जो बहुत कठिनाई से मिलता है।

(च) 1. प्राचीन 2. विषम 3. सुधा 4. निर्जीव 5. संन्यासी।

➡ सोच-समझ से

अधूरा	पूरा	अंदर	बाहर
अमावस्या	पूर्णिमा	अच्छा	बुरा
अस्तित्व	अभाव	साफ	गंदा
ऊपर	नीचे	अमीर	गरीब
नया	पुराना	आशा	निराशा
जीत	हार	राजा	रंक
गर्म	ठंडा	काला	सफेद
मित्र	शत्रु		

➡ कुछ करके देखिए

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

✤✤

8 संज्ञा

➡ बातों-बातों में

1. (i) बुढ़ापा सबको आता है।
(ii) फूलों की सुंदरता देखते ही बनती है।
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा।
3. (i) व्यक्तिवाचक संज्ञा,
(ii) जातिवाचक संज्ञा,
(iii) भाववाचक संज्ञा,
(iv) द्रव्यवाचक संज्ञा,
(v) समुदायवाचक संज्ञा।
4. (i) रुलाई, (ii) शाबाशी।

➡ लिखित में

(क)

1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को **संज्ञा** कहते हैं; जैसे— दीपावली, लालकिला, लालबहादुर शास्त्री, कपड़े, खुशियाँ।
2. जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं, उन्हें **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं। जैसे— श्रीरामचरितमानस, ताजमहल, राम, आगरा आदि।

3. जो संज्ञा शब्द किसी गुण, दोष, भाव, दशा, अवस्था आदि का बोध कराते हैं, उन्हें **भाववाचक संज्ञा** कहते हैं। जैसे– बुढ़ापा, सुंदरता, वीरता, क्रूरता, मित्रता आदि।
4. व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का नाम बताती है; जैसे– राम, दिल्ली, गंगा। जबकि जातिवाचक संज्ञा किसी पूरी जाति या वर्ग का बोध कराती है; जैसे– लड़का, शहर, नदी। मुख्य अंतर यह है कि व्यक्तिवाचक संज्ञा **एक की** ओर इशारा करती है और जातिवाचक संज्ञा **समूह या वर्ग** की ओर।
5. (i) एक लड़का खेल रहा है। (लड़का - जातिवाचक संज्ञा)
   सुरेश खेल रहा है। (सुरेश - व्यक्तिवाचक संज्ञा)
   (ii) यह नदी बहुत पवित्र है। (नदी - जातिवाचक संज्ञा)
   यमुना नदी बहुत पवित्र है। (यमुना - व्यक्तिवाचक संज्ञा)

(ख) 1. (iii) मैत्री
2. (i) व्यक्तिवाचक
3. (ii) अपनापन
4. (i) सेना

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. बुढ़ापा, 2. बुराई, 3. सजावट, 4. लाली।

(ङ) 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा
3. जातिवाचक संज्ञा
4. जातिवाचक संज्ञा
5. व्यक्तिवाचक संज्ञा
6. जातिवाचक संज्ञा
7. भाववाचक संज्ञा
8. भाववाचक संज्ञा

➡ सोच-समझ से

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
आम	मधुमक्खी	घनिष्ठता
सूरज	तितली	दल-बल
	वृक्ष	अंधेरा
	फूल	सुगंध
	कीट-पतंगे	
	पक्षी	
	बांधवों	

➡ कुछ करके देखिए

संज्ञा शब्द	भेद
हल	जातिवाचक
हरियाली	भाववाचक
लखनऊ	व्यक्तिवाचक
ताकत	भाववाचक
महानता	भाववाचक
खतरनाक	भाववाचक
कालापन	भाववाचक
नायक	जातिवाचक

✤✤

9 संज्ञा के विकारः लिंग, वचन, कारक

➡ बातों-बातों में

1. लिंग के दो भेद होते हैं– स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग।
2. शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक या अनेक होने का पता चलता है, उसे **वचन** कहते हैं।
3. कारक के भेदों की संख्या **आठ** है।
4. क्षमा, पानी।

➡ लिखित में

1. शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या प्राणी के स्त्री अथवा पुरुष जाति के होने का

पता चलता है उसे **लिंग** कहते हैं। जैसे– स्त्रीलिंग- हथिनी, पुल्लिंग– हाथी।

2. संज्ञा का लिंग बदलने पर विशेषण का रूप भी संज्ञा के लिंग के अनुसार बदल जाता है, विशेषकर उन विशेषणों में जिनके अंत में 'अ' आता है। जैसे– अच्छा, काला। पुल्लिंग संज्ञा के साथ विशेषण का पुल्लिंग रूप (अच्छा, काला) और स्त्रीलिंग संज्ञा के साथ विशेषण का स्त्रीलिंग रूप (अच्छी, काली) का प्रयोग होता है; क्रिया और विशेषण दोनों संज्ञा के अनुरूप बदलते हैं। जैसे– अच्छा लड़का (पुल्लिंग) और अच्छी लड़की (स्त्रीलिंग), काला घोड़ा और काली घोड़ी।
3. 'आनी' प्रत्यय लगाकर बनने वाले दो स्त्रीलिंग शब्द– पंडितानी, चौधरानी।
4. बहुवचन बनाते समय ईकारांत शब्द का अन्तिम दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है; जैसे– कली-कलियाँ, चींटी-चींटियाँ, टोपी-टोपियाँ, धोती-धोतियाँ, गली-गलियाँ।
5. हिंदी में कारक आठ होते हैं––
    1. कर्ता कारक– (परसर्ग- ने)
    2. कर्म कारक– (परसर्ग- को)
    3. करण कारक– (परसर्ग- से / के द्वारा / के साथ)
    4. संप्रदान कारक– (परसर्ग- को / के लिए / हेतु)
    5. अपादान कारक– (परसर्ग- से {अलग होने के भाव में})
    6. संबंध कारक– (परसर्ग- का, के, की / रा, रे, री / ना, ने, नी)
    7. अधिकरण कारक– (परसर्ग- में / पर)
    8. संबोधन कारक–(परसर्ग- हे!, ओ!, अरे!)

(ख) 1. (iii) पक्षी
2. (iii) जनता
3. (ii) संप्रदान कारक
4. (ii) संबोधन कारक

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. बहुवचन 2. अधिक 3. लोग 4. वचन

➡ सोच-समझ से

1. अपादान कारक अलगाव, स्रोत या तुलना (जैसे––से) को दर्शाता है, जबकि करण कारक क्रिया के साधन या माध्यम (जैसे– से, के द्वारा) को बताता है। मुख्य अंतर यह है कि करण में 'से' का अर्थ 'के द्वारा' और अपादान में 'से' का अर्थ 'अलग होना' होता है। जैसे––अपादान कारक– पेड़ से पत्ता गिरा (अलगाव)।
   करण कारक– राम ने चाकू से फल काटा (साधन)।
2.

1. डॉक्टर––स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक
2. बहन के साथ– स्त्रीलिंग, एकवचन, संबंध कारक
3. बाग से– पुल्लिंग, बहुवचन, अपादान कारक
4. खेल में– पुल्लिंग, एकवचन, संप्रदान कारक

➡ कुछ करके देखिए

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

✤✤

10 सर्वनाम

➡ बातों-बातों में

1. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं––
   (i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम,
   (ii) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम,
   (iii) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम।
2. (i) <u>जैसा</u> करेगा <u>वैसा</u> भरेगा।
   (ii) <u>जो</u> परिश्रम करेगा <u>उसे</u> सफलता मिलेगी।
3. दरवाजे पर <u>कोई</u> खड़ा है।
4. मुझे अपना काम स्वयं करना चाहिए।

➡ लिखित में

(क)

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– <u>तुम</u> मेरे अच्छे मित्र हो।
2. सर्वनाम के छः भेद हैं–
   (i) पुरुषवाचक सर्वनाम,
   (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम,
   (iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम,

(iv) प्रश्नवाचक सर्वनाम,
(v) संबंध वाचक सर्वनाम,
(vi) निजवाचक सर्वनाम।

3. निश्चयवाचक सर्वनाम (यह, वह, ये, वे) किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते हैं और उन्हें स्पष्ट करते हैं; जबकि पुरुषवाचक सर्वनाम (मैं, तुम, वह) किसी व्यक्ति (बोलने वाला, सुनने वाला या कोई तीसरा) के स्थान पर आते हैं। यानी कि पुरुषवाचक सर्वनाम व्यक्ति के लिए होते हैं, जबकि निश्चयवाचक सर्वनाम किसी चीज के निश्चित होने का बोध कराते हैं और संकेत करते हैं।
4. (i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम— <u>हम</u> विद्यालय में पढ़ते हैं।
(ii) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम— <u>आप</u> मंदिर जा रहे हैं।
(iii) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम— <u>उसे</u> पुस्तकें पढ़ना पसंद है।

(ख) 1. (i) मैंने
2. (iii) संबंधवाचक सर्वनाम
3. (ii) निजवाचक सर्वनाम
4. (i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. मुझसे 2. किससे 3. मेरी 4. जिसने 5. किसी का

➡ सोच-समझ से

1. (i) आप कहाँ जा रहे हैं?
(ii) वे कल आयेंगे।
2. अनिश्चयवाचक सर्वनाम में 'कोई' किसी अनिर्दिष्ट, अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करता है, जिससे किसी खास व्यक्ति या चीज की पहचान नहीं होती, बल्कि एक सामान्य या अज्ञात व्यक्ति (जैसे— कोई) या चीज (जैसे--कुछ) का बोध होता है। जैसे--कोई तो है जो मुझे देख रहा है।

➡ कुछ करके देखिए

उसने—अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
वे—अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
उस— अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
उन— अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

✤✤

11 शब्द-विचार

➡ बातों-बातों में

1. विशेषणों की विशेषता बताने वाले शब्द **प्रविशेषण** कहलाते हैं।
2. विशेषण के चार भेद होते हैं।
3. **कुछ लोग** बिना माँगे सलाह देते हैं।
4. विशेषण शब्दों की तीन अवस्थाएँ होती हैं— (i) मूलावस्था, (ii) उत्तरावस्था, (iii) उत्तमावस्था।

➡ लिखित में

(क)

1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे— वह <u>मीठे</u> स्वर में गा रही है।
2. जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का पता चलता है, उन्हें **संख्यावाचक** विशेषण कहते हैं; जैसे— मेरे मालिक को <u>दोगुना</u> लाभ हुआ। लेकिन जिन शब्दों से किसी वस्तु की माप-तौल आदि का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे— मुझे दो मीटर कपड़ा चाहिए।
3. परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं--
(i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण— जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित मात्रा का बोध होता है, उन्हें **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण** कहते हैं। जैसे— खीर के लिए दो <u>किलो</u> दूध चाहिए।
(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण— जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित मात्रा का बोध नहीं होता है, उन्हें **अनिश्चित परिमाणवाचक** विशेषण कहते हैं। जैसे— इस तालाब में <u>थोड़ा</u> पानी है।
4. विशेषणों की विशेषता बताने वाले शब्द

प्रविशेषण कहलाते हैं। जैसे— वह तो बड़ा ईमानदार बालक है।

5. **सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अंतर—** सर्वनाम शब्द और सार्वनामिक विशेषण एक ही होते हैं। किंतु वाक्यों में प्रयोग के आधार पर दोनों में अंतर हो जाता है; जैसे— -
वह नटखट है। (वह —सर्वनाम)
यह लड़का नटखट है। (यह — सार्वनामिक विशेषण)

(ख) 1. (i) गुणवाचक विशेषण
2. (ii) परिमाणवाचक विशेषण
3. (iii) सार्वनामिक विशेषण

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✗)

(घ) 1. लम्बा, 2. धार्मिक, 3. जापानी, 4. लखनवी, 5. बनारसी।

(ङ)

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
कठोर	कठोरतर	कठोरतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
मृदु	मृदुतर	मृदुतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम

➡ सोच-समझ से

1. वह बहुत सुन्दर चित्र बनाती है।
2. वह बहुत सुन्दर है।
3. वह ज्यादा चालाक है।
4. यह सुंदर कोमल गुलाब है।
5. आम बहुत मीठे हैं।

➡ कुछ करके देखिए

सुंदर, रंगीन, नशीला, लाजवाब, बेकार, रसिक, कसैला

✤✤

12 क्रिया

➡ बातों-बातों में

1. धातु में सामान्य क्रिया हेतु 'ना' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
2. प्रयोग/संरचना के आधार पर क्रिया के भेद इस प्रकार हैं—-(i) सामान्य क्रिया, (ii) संयुक्त क्रिया, (iii) नामधातु क्रिया, (iv) प्रेरणार्थक क्रिया, (v) पूर्वकालिक क्रिया।
3. शिक्षक ने विद्यार्थी को पुस्तक दी।
4. लाठी (संज्ञा) - लठियाना, अपना (सर्वनाम) - अपनाना।

➡ लिखित में

(क)

1. जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उन्हें क्रिया कहते हैं। जैसे— मैं प्रतिदिन स्कूल जाता हूँ।
2. जिन वाक्यों में क्रिया कर्म की अपेक्षा रखती है, **सकर्मक क्रिया** कहलाती है। जैसे— खाना, पीना, पढ़ना, लिखना, बनाना आदि। परंतु जिन वाक्यों में क्रिया कर्म की अपेक्षा नहीं रखती, **अकर्मक क्रिया** कहलाती है। जैसे— हँसना, रोना, सोना, नहाना आदि।
3. वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग होने पर वह सामान्य क्रिया कहलाती है। जैसे— मोहन विद्यालय गया। वहीं वाक्य में दो या दो से अधिक धातुओं से बनी क्रिया **संयुक्त क्रिया** कहलाती है; जैसे— मैं पुस्तक पढ़ रही थी।
4. जो क्रिया वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले होती है, उसे **पूर्वकालिक क्रिया** कहते हैं; जैसे— बच्चे पढ़कर सो गए। (पढ़ना— पूर्वकालिक क्रिया तथा सोना—मुख्य क्रिया)।

(ख) 1. (i) प्रेरणार्थक
2. (ii) सकर्मक
3. (iii) सामान्य क्रिया
4. (iiii) दी

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓)
1. गाती है। 2. देखा। 3. पकाती है। 4. जाएगा।

(ङ) 1. झुठलाना, 2. बतियाना, 3. गरमाना, 4. मुटियाना, 5. बड़बड़ाना 6. लजाना, 7. फिल्माना, 8. तुतलाना, 9. घरघराना, 10. भिनभिनाना।

➡ सोच-समझ से

प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग हुआ है। इस वाक्य में कर्ता (रवि) स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे (भाई) से कार्य करवा रहा है, और इसका रूप द्वितीय प्रेरणार्थक है क्योंकि 'लिखवाना', क्रिया 'लिखना' से बनी है, जहाँ 'लिखवाना' में 'वाना' प्रत्यय जुड़कर कार्य करवाने का भाव स्पष्ट हो रहा है, जो कि प्रेरणा देने (प्रथम प्रेरणार्थक) के बाद का चरण है।

➡ कुछ करके देखिए

1. (i) सूर्य का उगना,
   (ii) हवा का चलना,
   (iii) पानी का बहना,
   (iv) फूल का खिलना,
   (v) पत्तियों का गिरना।
2. अध्यापक की सहायता से छात्र वाक्य स्वयं बनाएँ।

✤✤

13 काल

➡ बातों-बातों में

1. काल के तीन भेद हैं— (i) भूतकाल, (ii) वर्तमान काल और (iii) भविष्यत् काल।
2. वर्तमान काल के तीन भेद हैं—(i) सामान्य वर्तमान काल, (ii) अपूर्ण वर्तमान काल तथा (iii) संदिग्ध वर्तमान काल।
3. संदिग्ध वर्तमान काल का उदाहरण- बच्चे विद्यालय पहुँच रहे होंगे।
4. भविष्य काल के तीन भेद हैं— सामान्य भविष्य काल, संभाव्य भविष्य काल तथा हेतुहेतुमद् भविष्य काल।

➡ लिखित में

1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे **काल** कहते हैं। जैसे— मैं बाजार गया था। (भूतकाल), मुझे राखी बाँधो। (वर्तमान काल)
2. क्रिया के जिस रूप से कार्य के सामान्य रूप से भूतकाल में होने का बोध हो, उसे **सामान्य भूतकाल** कहते हैं। जैसे— अकबर ने पुस्तक पढ़ी। लेकिन क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी समाप्त हुई है, उसे **आसन्न भूतकाल** कहते हैं; जैसे— मैंने अभी पुस्तक पढ़ी है।
3. क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह वर्तमान काल में शुरू हो गई है पर अभी समाप्त नहीं हुई है, उसे **अपूर्ण वर्तमान काल** कहते हैं; जैसे— बारिश हो रही है। वहीं क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में पूर्ण होने का संदेह हो, उसे **संदिग्ध वर्तमान काल** कहते हैं; जैसे— गाय रँभाती होगी।
4. भविष्य काल के तीन भेद होते हैं—
   (i) सामान्य भविष्य काल— क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य काल में सामान्य रूप से होने का पता चलता है, उसे **सामान्य भविष्य** काल कहते हैं। जैसे— मोहन दो बजे नहाएगा।
   (ii) संभाव्य भविष्य काल— क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने की संभावना हो, उसे **संभाव्य भविष्य काल** कहते हैं। जैसे— शायद दादाजी आज गाँव जाएँ।
   (iii) हेतुहेतुमद् भविष्य काल— क्रिया के जिस रूप से पता चले कि भविष्य काल में कार्य किसी अन्य क्रिया के होने पर ही होगा, उसे **हेतुहेतुमद् भविष्य काल** कहते हैं। जैसे— यदि टिकट मिल गई तो सर्कस देखने जाएँगे।

(ख) 1. (iii) हेतुहेतुमद् भविष्य काल का
2. (ii) भूतकाल
3. (i) सामान्य भूतकाल
4. (iv) हेतुहेतुमद् भूतकाल

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (×) 4. (×)

(घ) 1. हुआ था। 2. है। 3. गए। 4. डूबता है। 5. लाएँ।

➡ सोच-समझ से

वर्तमान काल, भूतकाल। क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध होता है, उसे **वर्तमान काल** कहते हैं,

जबकि क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य बीते हुए समय में पूरा हो गया है, उसे **भूतकाल** कहते हैं।

➡ कुछ करके देखिए

सामान्य भूतकाल — पूजा ने गृहकार्य किया।
आसन्न भूतकाल — पूजा ने गृहकार्य कर लिया है।
पूर्ण भूतकाल — पूजा ने गृहकार्य कर लिया था।
अपूर्ण भूतकाल — पूजा गृहकार्य कर रही थी।
संदिग्ध भूतकाल — पूजा ने गृहकार्य कर लिया होगा।

✤✤

14 वाच्य

➡ बातों-बातों में

1. जब वाक्य में कर्ता तथा कर्म दोनों पीछे हट जाते हैं तब **भाव** की प्रधानता होती है।
2. वाच्य तीन प्रकार के होते हैं।
3. कर्तृवाच्य में क्रिया का संबंध सीधे कर्ता से होता है।
4. कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक तथा सकर्मक दोनों हो सकती है।

➡ लिखित में

1. क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि उसके लिंग तथा वचन का प्रयोग कर्ता, कर्म अथवा भाव में से किसके अनुसार किया जा रहा है, उसे **वाच्य** कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—-
   1. कर्तृवाच्य— उदाहरण— बच्चे खेलते हैं।
   2. कर्मवाच्य—उदाहरण—मोहन द्वारा बाँसुरी बजाई जा रही है।
   3. भाववाच्य— उदाहरण—मयंक से चला नहीं जाता।
2. **कर्मवाच्य—** कर्मवाच्य में क्रिया का संबंध सीधे कर्म से होता है। इसमें क्रिया के लिंग तथा वचन कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे— सृष्टि द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है।
3. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिए इन बातों पर ध्यान देना चाहिए—(i) कर्ता के साथ 'से'/ (के द्वारा) / 'द्वारा' का प्रयोग किया जाता है। (ii) क्रिया में 'जा' जोड़ दिया जाता है। (iii) क्रिया का प्रयोग कर्म के लिंग, पुरुष और वचन के अनुसार होता है। जैसे—-कर्तृवाच्य— सुनीता नहाती है। कर्मवाच्य— सुनीता द्वारा नहाया जाता है।
4. कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—
   (i) भाववाच्य में वाक्य अकर्मक क्रिया में होता है।
   (ii) क्रिया को अन्य पुरुष एकवचन में कर दिया जाता है तथा कर्ता के साथ 'से' / 'के द्वारा' / 'द्वारा' जोड़ दिया जाता है।
   (iii) क्रिया को सामान्य भूत में बदल दिया जाता है तथा काल के अनुसार 'जाना' क्रिया का रूप जोड़ दिया जाता है। उदाहरण—-
   कर्तृवाच्य— मैं प्रतिदिन नहाता हूँ।
   भाववाच्य— मेरे द्वारा प्रतिदिन नहाया जाता है।

(ख) 1. (ii) भाववाच्य
2. (iii) भाववाच्य
3. (ii) कर्मवाच्य
4. (ii) कर्मवाच्य

(ग) 1. (×) 2. (×) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. सकीना द्वारा पढ़ा जाता है।
2. उसके द्वारा खेला नहीं जाता।
3. पिताजी के द्वारा सोया जा रहा होगा।
4. मुझसे नहीं जाया जाएगा।

(ङ) 1. इस तैराक से तेज तैरा जाता है।
2. मेरे द्वारा प्रतिदिन नहाया जाता है।
3. नाविक से नदी में तैरा जा रहा था।
4. अमित से दौड़ा नहीं जाता।

➡ सोच-समझ से

कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य में मुख्य अंतर क्रिया और वाक्य के केंद्रबिंदु का होता है— **कर्तृवाच्य** में कर्ता प्रधान होता है, क्रिया कर्ता के अनुसार बदलती है; **कर्मवाच्य** में कर्म प्रधान होता है और क्रिया कर्म के अनुसार

बदलती है; जबकि **भाववाच्य** में न कर्ता और न कर्म, बल्कि क्रिया का भाव प्रधान होता है, जिसमें अकर्मक क्रिया और 'जाना' क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे—-कर्तृवाच्य— मैं इस पेड़ पर नहीं चढ़ सकता। कर्मवाच्य— मुझसे इस पेड़ पर चढ़ा नहीं जाता। भाववाच्य—मुझसे इस पेड़ पर नहीं चढ़ा जाएगा।

➡ कुछ करके देखिए

कर्तृवाच्य के वाक्य

1. राम पुस्तक पढ़ता है।
2. सीता खाना खाती है।
3. बच्चे खेलते हैं।
4. मैं पत्र लिखता हूँ।
5. अध्यापक पढ़ाते हैं।
6. किसान खेती करता है।
7. लड़की नाचती है।
8. माली पौधों को पानी देता है।
9. पक्षी उड़ते हैं।
10. सुरेश मछली पकड़ता है।

कर्मवाच्य के वाक्य

1. लड़कों द्वारा मैच खेला जा रहा है।
2. मुझसे पत्र लिखा गया।
3. शिक्षक द्वारा पाठ पढ़ाया जाता है।
4. मेरे द्वारा खाना बनाया जाएगा।
5. पुलिस द्वारा चोर पकड़ा गया।
6. राम द्वारा आम खाया गया।
7. मजदूरों द्वारा घर बनाया जा रहा है।
8. माता द्वारा भोजन परोसा गया।
9. नौकर द्वारा चाय लायी जाएगी।
10. गाँव वालों द्वारा पेड़ लगाए गए।

भाववाच्य के वाक्य

1. इस तैराक द्वारा तेज तैरा जाता है।
2. घायल व्यक्ति से उठा नहीं जाता।
3. मेरे द्वारा प्रतिदिन नहाया जाता है।
4. चलो, घूमने चला जाय।
5. बच्चों द्वारा शांत नहीं बैठा जाता।
6. नाविक द्वारा नदी में तैरा गया।
7. मोटे व्यक्ति से भागा नहीं जाता है।
8. दादाजी द्वारा प्रतिदिन टहला जाता है।
9. हमारे द्वारा गर्मियों में छत पर सोया जाता है।
10. पक्षियों द्वारा घोंसले में सोया जाता है।

✤✤

15 अव्यय/अविकारी शब्द

➡ बातों-बातों में

1. अव्यय को अविकारी शब्द भी कहते हैं।
2. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द 'क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।
3. समुच्चयबोधक दो प्रकार के होते हैं—- (i) समानाधिकरण और (ii) व्यधिकरण।
4. भय तथा विस्मय प्रकट करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

➡ लिखित में

(क) 1. जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है, उसे **क्रियाविशेषण** कहते हैं।

क्रियाविशेषण के चार भेद हैं—-

(i) कालवाचक क्रियाविशेषण—हमें **प्रतिदिन** व्यायाम करना चाहिए।

(ii) स्थानवाचक क्रियाविशेषण— ईश्वर **सब जगह** है।

(iii) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण— उसको कला से **बहुत** प्रेम है।

(iv) रीतिवाचक क्रियाविशेषण— कछुआ **तेजी** से नहीं चल सकता है।

2. (i) **विशेषण—** वह एक **होशियार** छात्र है।
क्रियाविशेषण— वह **होशियारी** से काम करता है।
(ii) **विशेषण—** वह बहुत सुंदर है।
क्रियाविशेषण— वह बहुत तेजी से दौड़ी।
3. जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें **संबंधबोधक** कहते हैं। जैसे— बंदर पेड़ के ऊपर बैठा था।

4. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक**— जो समुच्चयबोधक समान स्तर वाले अंशों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें **समानाधिकरण** समुच्चयबोधक कहते हैं। जैसे— राम **और** लक्ष्मण भाई हैं।
समानाधिकरण समुच्चयबोधक के पाँच भेद हैं— (i) संयोजक— इनसे शब्द, वाक्य तथा वाक्यांश परस्पर जुड़ते हैं। जैसे— व, और, तथा, एवं आदि। **उदाहरण**-सेब **तथा** नारंगी फल हैं।
(ii) विभाजक— ये शब्दों, वाक्यों और वाक्यांशों में परस्पर विभाजन करते हैं। ये हैं— परंतु, अपितु, बल्कि, चाहे, तो, मगर, यदि। जैसे— तुम चलोगे **तो** मैं चलूँगा।
(iii) विकल्पसूचक— इनसे विकल्प का पता चलता है। ये हैं— अथवा, अन्यथा, कि आदि। जैसे— मेहनत करो **अन्यथा** असफल हो जाओगे।
(iv) विरोधसूचक— ये शब्द परस्पर विरोध करने वाले कथनों को जोड़ते हैं। ये हैं— वरन्, पर, किंतु, परंतु आदि। जैसे— रामू ने उसे रोका **परंतु** वह न रुका।
(v) परिणामसूचक— ये शब्द परस्पर दो उपवाक्यों को जोड़कर परिणाम दर्शाते हैं। ये हैं— अतः, अतएव, फलतः, इसलिए आदि। जैसे— आप मेरी सहायता करेंगे **इसीलिए** आपके पास आया हूँ।
5. जो अव्यय / अविकारी शब्द संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण अथवा क्रिया-विशेषण को विशेष बल प्रदान करते हैं, उन्हें **निपात** कहते हैं। जैसे— मुझे विद्यालय तक छोड़ दीजिए।

(ख) 1. (i) कालवाचक क्रियाविशेषण
2. (ii) क्रियाविशेषण
3. (iii) समुच्चयबोधक
4. (ii) संकेतसूचक समुच्चयबोधक

(ग) 1. (×) 2. (✓) 3. (✓) 4. (×) 5. (×)

(घ) 1. के अंदर 2. क्योंकि 3. वाह! 4. और 5. धिक्कार है!

(ङ) 1. ऊँचा — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
2. खूब –– परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
3. सावधानीपूर्वक—रीतिवाचक क्रियाविशेषण
4. धीरे-धीरे—रीतिवाचक क्रियाविशेषण
5. परसों—कालवाचक क्रियाविशेषण
6. उतना ही ... जितना —परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

➡ सोच-समझ से

❊ 1. तुम्हें यह काम **ही** करना होगा।
2. केवल आप **ही** यहाँ आ सकते थे।
3. मैं **भी** चलूँगा।
4. वह **भी** आया।

❊ 1. हमें पौष्टिक भोजन करना चाहिए अर्थात् जिसमें दाल, चावल, रोटी और सब्जियाँ हों।
2. तुम पढ़ाई करो **अथवा** बाहर जाओ।
3. उसने इतनी सुंदर तस्वीर बनाई **मानो** अभी बोल पड़ेगी।
अर्थात्, अथवा, और मानो समुच्चय-बोधक शब्द हैं जो वाक्य के अर्थ में स्पष्टीकरण (अर्थात्), विकल्प (अथवा) और तुलना/संभावना (मानो) का अंतर लाते हैं, जिससे वाक्यों के संबंध और आशय स्पष्ट होते हैं। 'अर्थात्' का मतलब 'यानी' है, 'अथवा' एक या दूसरे को चुनना बताता है, जबकि 'मानो' किसी बात को 'जैसे कि' या कल्पना के रूप में दिखाता है जिससे वाक्य का अर्थ स्पष्ट, वैकल्पिक या कल्पनात्मक बन जाता है।

➡ कुछ करके देखिए

अध्यापक की सहायता से छात्र स्वयं करें।

✤✤

16 वाक्य-विचार

➡ बातों-बातों में

1. शब्दों का सार्थक समूह **वाक्य** कहलाता है।
2. वाक्य के दो अंग होते हैं––(i) उद्देश्य, (ii) विधेय।
3. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–– (i) विधानवाचक वाक्य, (ii) निषेधवाचक वाक्य, (iii) आज्ञावाचक वाक्य, (iv) प्रश्नवाचक वाक्य, (v) इच्छावाचक वाक्य,

(vi) संदेहवाचक वाक्य, (vii) विस्मयवाचक वाक्य, और (viiii) संकेतवाचक वाक्य।

4. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं-- (i) सरल वाक्य, (ii) संयुक्त वाक्य और (iii) मिश्रित वाक्य।

➡ लिखित में

(क) 1. भाव-विचारों को व्यक्त करने वाला शब्दों का सार्थक समूह **वाक्य** कहलाता है।
वाक्य के दो अंग होते हैं--

1. उद्देश्य— जिसके बारे में कुछ कहा जाए यानी क्रिया का कर्ता उद्देश्य कहलाता है। जैसे-- बच्चे पार्क में खेल रहे हैं। इस वाक्य में 'बच्चे' शब्द क्रिया का कर्ता है। अत: 'बच्चे' शब्द वाक्य का उद्देश्य है।

2. विधेय— उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए यानी उद्देश्य जो कार्य करे, विधेय कहलाता है। जैसे— बच्चे पार्क में खेल रहे हैं। इस वाक्य में 'पार्क में खेल रहे हैं' विधेय है, क्योंकि यह बात बच्चे (उद्देश्य) के विषय में कही गई है।

2. **संयुक्त वाक्य** में दो सरल वाक्य समुच्चय-बोधक द्वारा जुड़ते हैं; जबकि **मिश्रित वाक्य** में एक प्रधान उपवाक्य होता है और दूसरा आश्रित उपवाक्य। जैसे--

1. मैं स्टेशन पहुँचा **तो** गाड़ी जा चुकी थी। (मिश्रित वाक्य)

2. वह बालक छोटा है तथापि वह तेज दौड़ सकता है। (संयुक्त वाक्य)

3. संकेतवाचक वाक्य— जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करे, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे— बारिश समय से हुई इसलिए फसल अच्छी हुई।

4. जिस वाक्य में संदेह प्रकट हो, उसे **संदेहवाचक वाक्य** कहते हैं; जैसे— संभवत: आज हम गाँव जाएँ। लेकिन जिस वाक्य में आश्चर्य, हर्ष, शोक आदि का भाव प्रकट हो, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे— वाह! क्या खुशबू आ रही है।

5. (i) राम विद्यालय जाएगा। (विधानवाचक वाक्य)
(ii) राम विद्यालय नहीं जाएगा। (निषेधवाचक वाक्य)
(iii) राम, विद्यालय मत जाना। (आज्ञावाचक वाक्य)
(iv) क्या राम विद्यालय नहीं जाएगा? (प्रश्नवाचक वाक्य)
(v) राम आज विद्यालय जाए, ऐसी मेरी इच्छा है। (इच्छावाचक वाक्य)
(vi) शायद राम विद्यालय नहीं जाएगा। (संदेहवाचक वाक्य)
(vii) अरे! राम विद्यालय नहीं जाएगा। (विस्मयवाचक वाक्य)
(viii) अगर बारिश हुई, तो राम विद्यालय नहीं जाएगा। (संकेतवाचक वाक्य)

(ख) 1. (i) लता
2. (ii) संदेहवाचक वाक्य
3. (iii) मिश्रित वाक्य
4. (ii) इच्छावाचक वाक्य

(ग) 1. (×) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ)

उद्देश्य	विधेय
1. मेरे पिताजी	मुझे प्रतिदिन फल लाते हैं।
2.जानकी स्कूल के छात्र	मैच जीत गए।
3. पेड़ों को	मत काटो।
4. राधा और मोहन दोनों	पढ़ने जाते हैं।

(ङ)

1. महोदय! मेरे घर पर तुम्हारा स्वागत है।
2. शायद वह विद्यालय पहुँचा होगा।
3. मैंने उसे एक श्लोक नहीं सुनाया।
4. क्या वहाँ और कोई बालक नहीं था।

➡ सोच-समझ के

व्याकरणिक नियमों की जानकारी के अभाव से वाक्य अशुद्धि इसलिए आती है क्योंकि इससे लिंग, वचन, कारक, क्रिया, सर्वनाम, विशेषण, पदक्रम (शब्दों का क्रम) और विराम चिन्हों जैसे जरूरी तत्वों का गलत प्रयोग होता है, जिससे वाक्य का अर्थ बिगड़

जाता है, अस्पष्ट हो जाता है, या पूरी तरह बदल जाता है; जैसे— 'मैं प्रात: काल के समय पढ़ता हूँ' के स्थान पर 'मैं प्रात: काल पढ़ता हूँ' कहना सही है। क्योंकि 'प्रात: काल के समय' में अनावश्यक शब्द हैं, जो व्याकरणिक जानकारी की कमी दिखाते हैं।

➡ **कुछ करके देखिए**

अध्यापक की सहायता से छात्र स्वयं करें।

✤✤

17 विराम चिह्न

➡ **बातों-बातों में**

1. रुकने की क्रिया को हिंदी में विराम-चिन्ह् के नाम से जाना जाता है।
2. विराम-चिन्ह् का अर्थ है- ठहरने के स्थान पर लगने वाला चिन्ह्।
3. वाक्य के अर्थ का अनर्थ हो जाता है।
4. वाक्य में जहाँ कोई शब्द छूट जाता है, हंसपद का प्रयोग होता है।

➡ **लिखित में**

(क)

1. पढ़ते या लिखते समय रुकने अथवा स्पष्टता लाने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'विराम-चिन्ह्' कहते हैं। जैसे— राम घर जाता है। (पूर्ण विराम), आपका क्या नाम है? (प्रश्नवाचक चिन्ह्)
2. अल्पविराम— चिन्ह् का प्रयोग वहाँ किया जाता है, जहाँ बहुत अल्प अर्थात् कम समय के लिए रुका जाए; जैसे— बाजार से दाल, चीनी, गुड़ तथा फल ले आओ। जबकि अल्पविराम की अपेक्षा अधिक ठहरना हो वहाँ अर्धविराम लगाया जाता है; जैसे—पानी बरस रहा था; तेज हवा चल रही थी; अचानक मुझे जाना पड़ा।
3. इकहरे उद्धरण चिन् का प्रयोग किसी व्यक्ति के उपनाम, रचना तथा विशेष अर्थ में किया जाता है; जैसे—हरिवंश राय 'बच्चन' हिंदी के प्रसिद्ध कवि थे। जबकि दोहरा उद्धरण चिन् का प्रयोग किसी वचन को ज्यों-का-त्यों लिखने के लिए किया जाता है; जैसे— सरकार ने आदेश दिया, "किसानों का कर्ज माफ किया जाता है।"
4. विस्मयादिबोधक चिन् (!) का प्रयोग हर्ष, खुशी, दु:ख, विस्मय आदि भावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। जैसे— वाह! क्या बात है।

(ख) 1. (iii) लाघव चिन्ह्
2. (ii) प्रश्नवाचक चिन्ह्
3. (ii) कोष्ठक

(ग) 1. (✓) 2. (×) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. अल्पविराम
2. इकहरा उद्धरण चिन्ह्
3. विस्मयादिबोधक चिन्ह्
4. प्रश्नवाचक चिन्ह्
5. योजक चिन्ह्
6. हंसपद

➡ **सोच-समझ से**

योजक चिन्ह् का प्रयोग पुनरुक्त शब्दों या समस्त पदों को जोड़ने अथवा तुलनात्मक शब्दों में किया जाता है। जैसे— कभी-कभी मनुष्य गलती कर बैठता है। जबकि निर्देशक चिन्ह् का प्रयोग बात को स्पष्ट करने अथवा उदाहरण देते समय किया जाता है। जैसे— विद्यार्थी— श्रीमान् जी, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?

➡ **कुछ करके देखिए**

मेरी तबीयत ही लोहे की है जो मैं बीमार नहीं पड़ता, वरना कोई भी इस तरह बारिश, ठंडी, धूप में खड़ा रहे, तो जरूर बीमार पड़ जाएगा या नहीं? कितने दिन बीत गए, कितनी रातें, लेकिन मैं बराबर इसी तरह खड़ा हूँ। (लंबी ठंडी साँस छोड़कर) छे! चुंगी की यह नौकरी भी कोई नौकरी है!

✤✤

18 मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

➡ बातों-बातों में

1. जो वाक्यांश अपना सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें मुहावरा कहते हैं।
2. मुहावरा शब्द मूल रूप से 'अरबी' भाषा का है जिसका शाब्दिक अर्थ 'अभ्यास होना' या 'बातचीत करना' है।
3. मुहावरे का प्रयोग भाषा को सुंदर, रोचक और अर्थपूर्ण बनाने के लिए किया जाता है।
4. किसी विशेष स्थान पर प्रचलित हो जाने वाले कथन को 'लोकोक्ति' कहते हैं।

➡ लिखित में

(क)

1. जो वाक्यांश अपना सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें 'मुहावरा' कहते हैं। मुहावरों का प्रयोग स्वतंत्र नहीं होता है, ये वाक्यांश के रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे— आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना) = मैं तुम्हारी असलियत जान गया हूँ, अब तुम मेरी आँखों में धूल नहीं झोंक सकते हो।
2. किसी विशेष स्थान पर प्रसिद्ध हो जाने वाले कथन को लोकोक्ति कहते हैं। जैसे— एक अनार सौ बीमार (वस्तु कम परंतु चाहने वाले ज्यादा) = भारत में एक पद पर नियुक्ति के लिए हजारों लोग आवेदन करते हैं। यह तो 'एक अनार सौ बीमार' वाली बात हो गई।
3. मुहावरा एक वाक्यांश (वाक्य का एक अंश) होता है जो अपना शाब्दिक अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ देता है और वाक्य के अनुसार बदलता है; जैसे—आँखें चुराना, जबकि लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य होती हैए जो लोक अनुभव या ज्ञान पर आधारित होती है और अपने मूल रूप में ही प्रयोग होती है; जैसे— नाच न जाने आँगन टेढ़ा, जिसका उद्देश्य शिक्षा देना या किसी बात का समर्थन/विरोध करना होता है।

(ख) 1. (ii) वाक्यांश
2. (i) प्रसन्न होना
3. (ii) बलवान की मार पीड़ादायी होती है।
4. (ii) वस्तु कम परंतु चाहने वाले ज्यादा
5. (iii) बिना किसी हानि के कार्य सिद्ध होना।

(ग) 1. (×) 2. (✓) 3. (✓) 4. (×)

(घ) 1. टेढ़ी खीर
2. मुँह में पानी भर आया
3. दो टूक जवाब दिया
4. थाली के बैंगन
5. कोल्हू के बैल की तरह

(ङ) 1. (iv), 2. (v), 3. (i), 4. (ii), 5. (iii)

➡ सोच-समझ से

शरीर के अंगों पर आधारित दस मुहावरे

1. आँखें तरसना (किसी को देखने की तीव्र इच्छा होना)— विदेश में बसे पुत्र को देखने को वृद्ध माता-पिता की आँखें तरस गईं, किंतु वह नहीं लौटा।
2. आँखों से गिर जाना (सम्मान खो देना)— जिस दिन से गिरीश चोरी में पकड़ा गया है, वह सभी की आँखों से गिर गया है।
3. आँखें चार होना (आमना-सामना होना)— ज्यों ही सलीम की अनारकली से आँखें चार हुईं, वह अपनी सुध-बुध खो बैठा।
4. आँखों का तारा होना (बहुत प्रिय होना)— आजकल अंश अपनी आज्ञाकारिता और विनम्रता से पूरे परिवार की आँखों का तारा बना हुआ है।
5. उँगली पर नचाना (इशारे पर कार्य करना)— मैं आपके अधीन हूँ, इसका मतलब यह नहीं कि आप हर समय मुझे उँगलियों पर नचाते रहें।
6. पैरों तले जमीन खिसकना (घबरा जाना)— जेब में हाथ डालते ही मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई क्योंकि जेब के सारे पैसे गायब थे।
7. पीठ दिखाना (डरकर भागना)—युद्ध में दुश्मन को पीठ दिखाने की अपेक्षा लड़ते हुए मर जाना अच्छा है।

8. दिल टूटना (आघात पहुँचना)— सुबोध से मुझे ऐसी आशा न थी, उसके दुर्व्यवहार से मेरा दिल टूट गया।
9. कलेजा ठंडा होना (संतोष होना)—अब तो अपने भाई की मृत्यु का बदला लेने के बाद ही मेरा कलेजा ठंडा होगा।
10. एड़ी-चोटी का पसीना एक करना (बहुत मेहनत करना)—एड़ी-चोटी का पसीना एक करके ही कोई व्यक्ति धन व सम्मान प्राप्त कर सकता है।

पशु-पक्षियों पर आधारित दस लोकोक्तियाँ

1. अंधे के हाथ बटेर लगना (गुणहीन अथवा अयोग्य व्यक्ति को मनचाही वस्तु मिल जाना)— अधिकारियों की चापलूसी के कारण निकम्मे तथा अयोग्य सलमान की पदोन्नति हो जाने पर सभी ने यही कहा- अंधे के हाथ बटेर लग गई है।
2. ऊँट के मुँह में जीरा (जितनी जरूरत उससे बहुत कम मिलना)— किसानों की समस्या बहुत बड़ी है। छोटी-मोटी कर्जमाफी उनके लिए ऊँट के मुँह में जीरे के समान है।
3. काला अक्षर भैंस बराबर (पूर्णतया निरक्षर होना)— संजीव से पढ़ने को कह रहे हो? क्या तुम्हें नहीं मालूम, उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।
4. खोदा पहाड़ निकली चुहिया (परिश्रम अधिक, परिणाम कम)— चोरों ने रातभर तेनालीराम के कुएँ का पानी खाली किया और अंत में उनके हाथ खाली बक्सा लगा। एक चोर ने कहा इसे कहते हैं- खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
5. जिसकी लाठी उसकी भैंस (बलवान की जीत होना)—भैया, इस गाँव में तो बाहुबली अंकुर शेरसिंह का ही बोलबाला है। कहावत प्रसिद्ध है न, जिसकी लाठी उसकी भैंस।
6. शेर का बच्चा शेर ही होता है (वीर व्यक्ति का पुत्र वीर ही होता है)— पाकिस्तान की जेल से छूटकर आए लेफ्टिनेंट अभिनंदन सिंह के पिता ने भी कारगिल के युद्ध में दुश्मनों के दाँत खट्टे किए थे। ठीक ही कहा गया है— शेर का बच्चा शेर ही होता है।
7. साँप मरे न लाठी टूटे (बिना किसी हानि के कार्य सिद्ध होना)— मेरा तो सिद्धांत है कि साँप मरे न लाठी टूटे। इसलिए हर कार्य को बहुत ही सोच-समझकर और पूरा समय देकर करता हूँ।
8. शेर भूखा रहता है पर घास नहीं खाता (सज्जन कष्ट में भी बुरे काम नहीं करते)— श्रीराम ने अनेक कष्ट सहे किंतु अपनी मर्यादा नहीं छोड़ी। ठीक ही कहा है— शेर भूखा रहता है मगर घास नहीं खाता।
9. नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली (जीवनभर पाप करने के बाद पुण्य का दिखावा)— पूरी जिंदगी तो भीखू ने चोरी-चकारी में गुजारी, अब बड़ा धर्मात्मा बना फिरता है। इसी को कहते हैं— नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।
10. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद (मूर्ख या अज्ञानी व्यक्ति गुणवान वस्तु या अच्छे व्यक्ति की कद्र नहीं करता)— तुम उसे इतना महँगा तोहफा दे रहे हो, पर उसे पसंद नहीं आया, अरे! बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद!

➡ कुछ करके देखिए

1. नौ दो ग्यारह होना (भाग जाना)— गाँव वालों के आते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गए।
2. पानी-पानी होना (बहुत लज्जित होना)— शराब पीते हुए अचानक पकड़े जाने पर साधु पानी-पानी हो गया।
3. मक्खन लगाना (चापलूसी करना)— हरप्रसाद अपने अधिकारियों को मक्खन लगाने में सबसे आगे रहता है।
4. घर का भेदी लंका ढाए (किसी बहुत विश्वासपात्र द्वारा हानि पहुँचाना)— अपने सारे भेद किसी को न बताएँ क्योंकि पुरानी कहावत है— घर का भेदी लंका ढाए।
5. लेना एक न देना दो (किसी से कोई मतलब न रखना)— मैं तो सदा अपने काम में ही डूबा रहता हूँ। मेरे लिए तो लेना एक न देना दो वाली कहावत ही सही है।

चित्रों के आधार पर मुहावरे लिखिए—

1. आग में घी डालना
2. कोल्हू का बैल
3. दाँतों तले उँगली दबाना

✤✤

19 अपठित बोध

अपठित गद्यांश

➡ लिखित में

(1)

1. गांधीजी अहिंसा को अपना धर्म मानते थे।
2. गांधीजी को 'महात्मा' का दर्जा रवींद्रनाथ टैगोर ने दिया।
3. गांधीजी ने अपने अनुभवों को अपनी आत्मकथा 'माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ' नामक पुस्तक में संकलित किया।
4. विदेशी शासन से मुक्ति दिलाकर भारत की जनता को आजाद कराना ही महात्मा गांधी का सबसे मुख्य लक्ष्य था। इसके लिए गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाए गए नमक कर के विरोध में 1930 में 'दांडी मार्च' और 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' का नेतृत्व किया।
5. **शीर्षक—** महात्मा गांधीजी।

(2)

1. सही समय पर सही चुनाव न करने वाला व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बुरी तरह असफल हो जाता है।
2. जीवन का सफल कलाकार वह है जो अपने प्रत्येक काम का सावधानीपूर्वक चुनाव करता है।
3. जो व्यक्ति अपनी खाने-पीने की चीजों के चुनाव में सावधानी नहीं बरतता, जो भी सामने आता है, खा लेता है, वह अपना स्वास्थ्य चौपट कर बैठता है।
4. जो व्यक्ति अपने खाने-पीने, खेलने-कूदने, पढ़ने-लिखने और मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रमों का चुनाव करते समय सावधानी नहीं बरतता, उसकी दशा पेटू जैसी हो जाती है।
5. **शीर्षक—** चुनाव का महत्व।

(3)

1. (iv) ये सभी
2. (ii) ईश्वर
3. (i) दूसरों के दुःख दूर करने हेतु कार्य करना।
4. (iv) श्रेष्ठ
5. (i) श्रेष्ठ व्यक्ति

(1)

1. कवि ने इस दुनिया को मरने वाली कहा है।
2. कवि गरीब भिखारियों को गले लगाना चाहता है।
3. कवि को अमरों में नाम लिखाने का शौक है।
4. कवि अंधेरे घर में रहने वाले, जो अपनी ही नजर में छोटे लोग हैं, उनके लिए उद्यम का कोने-कोने में दीप जलाना चाहता है।
5. **शीर्षक—** उद्यम का दीप

(2)

1. (iii) हिमालय की बर्फ से पिघलकर
2. (ii) सफेद
3. (i) चंचल और व्याकुल
4. (i) सरिता
5. (ii) **शीर्षक—** सरिता जल

(3)

1. (iv) ये सभी
2. (iii) वायु
3. (iii) निःस्वार्थ देना सिखाने वाले
4. (i) जीवन सूना हो जाएगा।
5. (iii) पेड़-पौधे

✤✤

20 संवाद-लेखन

1. मोबाइल के उपयोग से हो रहे दुष्परिणामों को लेकर दो छात्रों के बीच संवाद

अजय – आजकल मोबाइल फोन हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन गया है, लेकिन इसके नुकसान भी बहुत बढ़ गए हैं।

विकास– बिल्कुल सही कहा! बच्चे घंटों मोबाइल पर गेम और सोशल मीडिया में लगे रहते हैं।

अजय – इससे आँखों में दर्द, सिरदर्द और नींद की समस्या हो रही है।

विकास– पढ़ाई पर भी बुरा असर पड़ रहा है, ध्यान केंद्रित नहीं हो पाता।

अजय – कई बच्चे मोबाइल की लत के कारण अपने माता-पिता की बात भी नहीं मानते।

विकास– हाँ, सामाजिक जीवन भी प्रभावित हो रहा है, लोग आपस में बात करना भूल रहे हैं।

अजय – हालाँकि मोबाइल का सही उपयोग ज्ञान बढ़ाने में सहायक है।

विकास– सही कहा, हमें मोबाइल का सीमित और सही समय पर उपयोग करना चाहिए।

अजय – हमें दूसरों को भी इसके दुष्परिणामों के बारे में जागरूक करना चाहिए।

2. प्रदूषण समस्या को लेकर दो प्राणियों के बीच संवाद

पक्षी – आजकल हवा इतनी दूषित हो गई है कि उड़ना भी मुश्किल हो रहा है।

मछली – मेरी हालत भी अच्छी नहीं है, नदियों का पानी बहुत गंदा हो गया है।

पक्षी – फैक्ट्रियों का धुआँ और गाड़ियों का प्रदूषण हमारी जान के लिए खतरा बन गया है।

मछली – लोग नदियों में कचरा और रसायन फेंक देते हैं, जिससे हमें साँस लेने में परेशानी होती है।

पक्षी – पेड़ों की कटाई भी प्रदूषण बढ़ा रही है।

मछली – अगर इंसान प्रकृति का सम्मान करे, तो यह समस्या कम हो सकती है।

पक्षी – हाँ, पेड़ लगाना और प्रदूषण कम करना बहुत जरूरी है।

मछली – तभी हम सभी जीव सुरक्षित जीवन जी सकेंगे।

3. प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग को लेकर दो छात्रों के बीच संवाद

नेहा – आज हर जगह प्लास्टिक का उपयोग बहुत बढ़ गया है।

पूजा – हाँ, दुकानों में सब कुछ प्लास्टिक की थैलियों में दिया जाता है।

नेहा – प्लास्टिक न तो जल्दी गलता है और न ही पर्यावरण के लिए अच्छा है।

पूजा – इससे मिट्टी, पानी और जानवरों को नुकसान पहुँचता है।

नेहा – कई जानवर प्लास्टिक खाकर बीमार हो जाते हैं।

पूजा – सरकार भी प्लास्टिक पर रोक लगाने की कोशिश कर रही है।

नेहा – हमें कपड़े और कागज के थैले इस्तेमाल करने चाहिए।

पूजा – सही कहा, हमें खुद भी प्लास्टिक का उपयोग कम करना चाहिए।

नेहा – जागरूकता से ही इस समस्या का समाधान संभव है।

4. जल-संकट को लेकर रामू और उसकी दादी के बीच संवाद

रामू – दादी, आज घर में पानी बहुत कम आ रहा है।

दादी – हाँ बेटा, जल-संकट आज एक बड़ी समस्या बन गया है।

रामू – लोग पानी को बहुत व्यर्थ बहाते हैं।

दादी – पहले लोग पानी की बहुत कद्र करते थे।

रामू – नदियाँ और तालाब भी सूखते जा रहे हैं।

दादी – पेड़ों की कटाई भी इसका कारण है।

रामू – हमें पानी बचाने के उपाय अपनाने चाहिए।

दादी – बिल्कुल, वर्षा जल संचयन बहुत जरूरी है।

रामू – मैं अपने दोस्तों को भी पानी बचाने के लिए समझाऊँगा।

दादी – यही जिम्मेदार नागरिक की पहचान है।

5. रवि और मोहित के बीच ट्रैफिक जाम की समस्या को लेकर संवाद

रवि – आज सड़क पर बहुत ट्रैफिक जाम था।

मोहित – हाँ, रोज यही समस्या रहती है।

रवि – लोग ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं करते।

मोहित – गलत पार्किंग और सिग्नल तोड़ना भी बड़ा कारण है।

रवि – इससे समय और ईंधन दोनों की बर्बादी होती है।
मोहित – एम्बुलेंस भी जाम में फँस जाती है।
रवि – अगर लोग धैर्य रखें तो जाम कम हो सकता है।
मोहित – सार्वजनिक परिवहन का उपयोग भी बढ़ाना चाहिए।
रवि – हमें खुद नियमों का पालन करना चाहिए।
मोहित – सही कहा, बदलाव की शुरुआत हमसे ही होनी चाहिए।

21 पत्र-लेखन

1. विद्यालय में ग्रीष्मावकाश के दौरान समर कैंप आयोजित करने का अनुरोध करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र

प्रेषक
राकेश कुमार
कक्षा 7 'A'
आदर्श विद्यालय दिल्ली
दिनांक: 25 मार्च 20--
सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय
आदर्श विद्यालय
दिल्ली

विषय: ग्रीष्मावकाश में समर कैंप आयोजित करने हेतु प्रार्थना-पत्र

महोदय, सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में ग्रीष्मावकाश के दौरान छात्रों के लिए समर कैंप का आयोजन किया जाए। इससे छात्रों का समय सदुपयोग होगा तथा वे खेल, योग, संगीत, चित्रकला और कंप्यूटर जैसी गतिविधियों में भाग ले सकेंगे।

समर कैंप से छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास में सहायता मिलेगी। गर्मी की छुट्टियों में बच्चे घर पर मोबाइल और टीवी में समय नष्ट करते हैं, जबकि समर कैंप उन्हें अनुशासन और रचनात्मकता सिखाएगा।

अत: आपसे विनम्र अनुरोध है कि विद्यार्थियों के हित में समर कैंप आयोजित करने की कृपा करें।

धन्यवाद।
भवदीय
राकेश कुमार
कक्षा 7 'A'

2. अपनी रचना 'हिंदुस्तान टाइम्स' समाचार-पत्र में प्रकाशित करने की प्रार्थना करते हुए संपादक को पत्र

प्रेषक
रवि शर्मा
नई दिल्ली
दिनांक: 05 जनवरी 20_ _
सेवा में, संपादक महोदय
हिंदुस्तान टाइम्स
नई दिल्ली

विषय: रचना प्रकाशित करने हेतु प्रार्थना-पत्र

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं एक छात्र हूँ और मुझे लेखन का बहुत शौक है। मैंने 'पर्यावरण संरक्षण' विषय पर एक लेख लिखा है। यह लेख समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से लिखा गया है।

आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से यदि मेरी रचना प्रकाशित हो जाए तो मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी और अन्य लोग भी इससे लाभान्वित होंगे।

अत: आपसे निवेदन है कि मेरी रचना को अपने समाचार-पत्र में प्रकाशित करने की कृपा करें।

धन्यवाद।
भवदीय
रवि शर्मा

3. गणित की अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था हेतु अपने प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र

प्रेषक
सोनू वर्मा
कक्षा 7 'B'
सरस्वती विद्यालय
दिनांक: 10 नवंबर 20--
सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय
सरस्वती विद्यालय
विषय: गणित की अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था हेतु प्रार्थना पत्र
महोदय,
सविनय निवेदन है कि हमारी कक्षा के कई छात्रों को गणित विषय समझने में कठिनाई हो रही है। पाठ्यक्रम भी विस्तृत है और समय कम है।
यदि विद्यालय में गणित की अतिरिक्त कक्षाएँ लगाई जाएँ तो छात्रों को विषय समझने में सहायता मिलेगी और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होंगे। इससे छात्रों का आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।
अत: आपसे विनम्र अनुरोध है कि गणित की अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था करने की -कृपा करें।
धन्यवाद।
भवदीय
सोनू वर्मा
कक्षा 7 'B'

4. अपने इलाके में अनियमित विद्युत कटौती की शिकायत करते हुए विद्युत विभाग को पत्र

प्रेषक
अमित कुमार
शास्त्री नगर जयपुर
दिनांक: 05 जनवरी 20_ _
सेवा में,
विद्युत विभाग अधिकारी
जयपुर
विषय: अनियमित विद्युत कटौती के संबंध में
महोदय,
सविनय निवेदन है कि हमारे क्षेत्र शास्त्री नगर में पिछले कई दिनों से बार-बार बिजली कटौती हो रही है। इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई और आम जनता का जीवन बहुत प्रभावित हो रहा है।
रात के समय बिजली न होने से परेशानी और बढ़ जाती है। कई बार बिना सूचना के घंटों बिजली चली जाती है।
अत: आपसे निवेदन है कि इस समस्या का शीघ्र समाधान करें और नियमित विद्युत आपूर्ति की व्यवस्था करें।
धन्यवाद।
भवदीय
अमित कुमार

5. अपने विदेशी मित्र को भारत भ्रमण हेतु निमंत्रण-पत्र

प्रेषक
राहुल
दिल्ली, भारत
दिनांक: 25 फरवरी 20--
प्रिय मित्र जॉन,
सप्रेम नमस्ते।
आशा है तुम स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। मैं तुम्हें यह पत्र भारत भ्रमण के लिए आमंत्रित करने हेतु लिख रहा हूँ। भारत विविधताओं का देश है। यहाँ ऐतिहासिक स्थल, सुंदर मंदिर, किले और प्राकृतिक सौंदर्य देखने योग्य हैं। तुम ताजमहल, जयपुर के किले, केरल की बैकवाटर्स और हिमालय की सुंदरता देख सकते हो। यहाँ का भोजन और संस्कृति भी बहुत आकर्षक है।
आशा है तुम शीघ्र ही भारत की यात्रा करोगे और हम साथ में खूब घूमेंगे।
तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।
तुम्हारा मित्र
राहुल

✤✤

22 विज्ञापन लेखन

1. रॉकी स्कूल बैग्स के लिए।

ROCKY SCHOOL BAGS

पढ़ाई का सच्चा साथी

- हल्का और मजबूत ● वाटरप्रूफ सामग्री
- नए रंग व डिजाइन ● बच्चों के लिए आरामदायक

ROCKY SCHOOL BAGS

हर छात्र की पहली पसंद

आज ही खरीदें : सभी स्टेशनरी दुकानों पर उपलब्ध

2. अपने क्षेत्र में दशहरा मेले के लिए।

भव्य दशहरा मेला

स्थान : रामलीला मैदान, आगरा

(10 से 15 अक्टूबर)

- झूले, खेल ● रामलीला

दोपहर 1 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

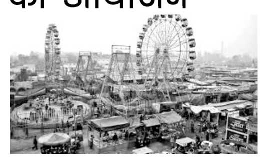

परिवार सहित पधारें

दशहरा मेला- खुशियों का मेला

मेला स्थल तक सभी क्षेत्रों से सरकारी बसें उपलब्ध

3. जल संरक्षण की जागरूकता हेतु।

जल है तो कल है!

- पानी व्यर्थ न बहाएँ
- वर्षा जल संचयन अपनाएँ
- पेड़ लगाएँ, जीवन बचाएँ

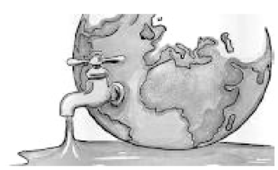

आज नहीं बचाया तो कल पछताना पड़ेगा

जल बचाओ–जीवन बचाओ

4. ''रजत पेंसिल तथा स्टेशनरी'' की बिक्री बढ़ाने हेतु।

रजत पेंसिल तथा स्टेशनरी

- सस्ती और टिकाऊ
- उत्तम गुणवत्ता
- सभी स्टेशनरी एक ही जगह

रजत — पढ़ाई का भरोसा

रजत — छात्रों की पहली पसंद

5. स्कूली बच्चों हेतु टिकाऊ व मजबूत जूतों के लिए।

स्कूली बच्चों हेतु पैरागॉन जूते

- मजबूत और टिकाऊ
- आरामदायक
- महीनों चलते जीवनभर टिकते

मजबूत जूते

- सस्ते और अच्छे
- छोटे बच्चों के लिए भी उपलब्ध

आराम भी, सुरक्षा भी

आज ही पैरागॉन जूते खरीदें

सभी जूतों की दुकानों पर उपलब्ध

23 कहानी लेखन

1. सच्ची मित्रता

एक समय की बात है, एक घने जंगल में कृष्णन नाम का एक हिरण और सुदामा नाम का एक कौआ रहते थे। दोनों की मित्रता पूरे जंगल में प्रसिद्ध थी। वे अपना सुख-दुख एक-दूसरे के साथ साझा करते और हमेशा साथ रहते थे।

एक दिन, एक शिकारी ने हिरण को पकड़ने के लिए जाल बिछाया। कृष्णन अनजाने में उस जाल में फँस गया। उसने निकलने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह जितना छटपटाता, जाल उतना ही कसता जाता। उसने मदद के लिए अपने मित्र सुदामा को पुकारा।

सुदामा तुरंत वहाँ पहुँचा। उसने देखा कि शिकारी दूर से आ रहा है। सुदामा ने घबराकर हार नहीं मानी, बल्कि बुद्धिमानी से काम लिया। उसने कृष्णन से कहा, ''मित्र! शिकारी के पास आने पर तुम अपनी साँसें रोक लो और ऐसे लेट जाओ जैसे तुम मर चुके हो। जब मैं काँव-काँव

करूँ, तब तुम पूरी ताकत लगाकर भाग जाना।''

जैसे ही शिकारी करीब आया, उसने हिरण को निश्चल पड़ा देखा। उसे लगा कि हिरण मर चुका है। उसने खुशी-खुशी जाल ढीला कर दिया ताकि वह उसे उठा सके। ठीक उसी क्षण सुदामा ने जोर से शोर मचाया। संकेत मिलते ही कृष्णन तेजी से उठकर झाड़ियों में गायब हो गया। शिकारी हक्का-बक्का रह गया।

कहानी की सीख—सच्चा मित्र वही है जो केवल सुख में ही नहीं, बल्कि संकट के समय अपनी बुद्धि और साहस से साथ दे। मित्रता में शारीरिक बल से अधिक मानसिक एकता और विश्वास का महत्व होता है।

2. चिड़िया की मित्रता

एक विशाल बरगद के पेड़ पर एक छोटी सी गौरैया रहती थी। उसी पेड़ की जड़ के पास एक हाथी अक्सर आराम करने आता था। धीरे-धीरे गौरैया और हाथी में गहरी मित्रता हो गई। गौरैया उसे जंगल की ताजा खबरों के बारे में बताती और हाथी अपनी सूँड़ से पेड़ की ऊँची टहनियों से उसे मीठे फल तोड़कर देता।

एक दोपहर, जंगल में एक शिकारी आया। उसने देखा कि पेड़ पर गौरैया के घोंसले में नन्हें बच्चे चहचहा रहे हैं। शिकारी ने पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की ताकि वह उन बच्चों को पकड़ सके। गौरैया यह देखकर बहुत डर गई और जोर-जोर से चिल्लाने लगी।

उसकी आवाज सुनकर हाथी तुरंत वहाँ पहुँचा। स्थिति को समझते ही हाथी ने अपनी शक्ति का परिचय दिया। उसने जोर से चिंघाड़ मारी और पेड़ को हल्के से हिलाया। शिकारी डर के मारे नीचे गिर गया और अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग निकला।

कुछ दिनों बाद, हाथी की आँख में एक जहरीला काँटा चुभ गया। हाथी दर्द से बेहाल था और कोई उसकी मदद नहीं कर पा रहा था। तब नन्हीं गौरैया ने अपनी छोटी सी चोंच से बड़ी कुशलता और सावधानी के साथ वह काँटा बाहर निकाल दिया। हाथी को तुरंत आराम मिला। उसने अपनी नन्हीं मित्र को धन्यवाद दिया।

कहानी की सीख—मित्रता में सामर्थ्य नहीं, बल्कि भावना और समय पर सहायता महत्वपूर्ण होती है। एक छोटा सा मित्र भी मुसीबत में पहाड़ जैसी मदद कर सकता है।

3. मोबाइल का सबक

रोहन सातवीं कक्षा का एक होनहार छात्र था, लेकिन पिछले कुछ महीनों से उसे मोबाइल गेम खेलने और सोशल मीडिया की ऐसी लत लगी कि उसने पढ़ाई और खेलकूद से नाता तोड़ लिया। उसके माता-पिता उसे अक्सर समझाते, पर रोहन अनसुना कर देता।

एक दिन रोहन की विज्ञान की अंतिम परीक्षा थी। रात भर वह मोबाइल पर गेम खेलता रहा और सोचा कि सुबह जल्दी उठकर पढ़ लेगा। लेकिन देर रात तक जागने के कारण उसकी आँख नहीं खुली। जब वह सोकर उठा, तो परीक्षा शुरू होने में केवल आधा घंटा बचा था। वह बदहवास होकर स्कूल पहुँचा, लेकिन हड़बड़ी में वह अपना 'एडमिट कार्ड' और पेन बॉक्स घर पर ही भूल गया।

परीक्षा हॉल में बैठा रोहन खाली पेपर देखता रहा। उसे वे सारे प्रश्न धुँधले याद आ रहे थे जो उसने मोबाइल के चक्कर में ठीक से नहीं पढ़े थे। परिणामस्वरूप, वह फेल हो गया। यह उसके जीवन की पहली असफलता थी।

घर लौटकर वह बहुत रोया। उसने अपना मोबाइल अपने पिता को सौंप दिया और कहा, ''पिताजी, इस बेजान मशीन ने मुझसे मेरी मेहनत और मेरा समय छीन लिया। मुझे समझ आ गया है कि तकनीक हमारे लाभ के लिए है, हमें उसका गुलाम नहीं बनना चाहिए।'' उस दिन के बाद रोहन ने मोबाइल का उपयोग केवल जानकारी प्राप्त करने के लिए सीमित समय तक किया।

कहानी की सीख—मोबाइल और तकनीक मनोरंजन के साधन हैं, जीवन का लक्ष्य नहीं। अति किसी भी चीज की बुरी होती है, और समय का सदुपयोग ही सफलता की कुँजी है।

4. सारस और लोमड़ी

एक घने जंगल में एक लोमड़ी रहती थी, जो अपनी चालाकी के लिए प्रसिद्ध थी। उसी जंगल में एक सारस भी रहता था, जिसकी लंबी चोंच और शांत स्वभाव था। एक दिन लोमड़ी ने सारस को अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित करने को सोचा। उसका इरादा सारस का मजाक उड़ाना था।

सारस ने लोमड़ी का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और खुशी-खुशी उसके घर पहुँचा। लोमड़ी ने जानबूझकर सारस के लिए एक चौड़ी, उथली थाली में सूप परोसा। सारस की लंबी चोंच के कारण वह थाली से एक बूँद भी सूप नहीं पी पाया। वह भूखा ही रह गया, जबकि लोमड़ी ने मजे से सारा सूप पी लिया और सारस का मजाक उड़ाती रही।

सारस को लोमड़ी की इस हरकत पर बहुत बुरा लगा, लेकिन उसने कुछ कहा नहीं। उसने सोचा कि वह लोमड़ी को एक सबक सिखाएगा। कुछ दिनों बाद, सारस ने भी लोमड़ी को अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित किया।

लोमड़ी खुशी-खुशी सारस के घर पहुँची। सारस ने उनके लिए एक लंबी और संकरी गर्दन वाले मटके (सुराही) में स्वादिष्ट भोजन परोसा। सारस ने अपनी लंबी चोंच से आसानी से मटके में से भोजन खा लिया। लेकिन लोमड़ी का मुँह चौड़ा था और वह मटके के अंदर तक पहुँच ही नहीं पाई। वह भूखी ही रह गई और उसे अपनी पिछली गलती का एहसास हुआ।

कहानी की सीख—हमें हमेशा दूसरों के प्रति सम्मान और शिष्टाचार दिखाना चाहिए। जैसा व्यवहार हम दूसरों के साथ करते हैं, वैसा ही व्यवहार हमें भी वापस मिलता है।

5. गधे की मूर्खता

एक गाँव में एक गधा रहता था। उसका नाम चिंटू था। चिंटू हमेशा खुद को सबसे चालाक और समझदार समझता था। वह हर समय दूसरों को नीचा दिखाता और अपने आप पर बहुत घमंड करता। गाँव के लोग उसे समझाते, ''चिंटू, घमंड और मूर्खता से कुछ नहीं होता, विनम्र रहो।'' लेकिन चिंटू उनकी बात नहीं मानता था।

एक दिन चिंटू को अपने घमंड का प्रदर्शन करने का विचार आया। वह नदी पार करने जा रहा था और सोच रहा था, ''मैं सबसे चालाक हूँ, कोई मुझे रोक नहीं सकता।'' लेकिन जैसे ही वह नदी के किनारे पहुँचा और पानी में कदम रखा, उसका पैर फिसल गया और वह पानी में गिर गया। चिंटू डर के मारे जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

सुनकर गाँव के लोग तुरंत आए और उसकी मदद करने लगे। उन्होंने चिंटू को बाहर निकाला। पानी में भीगकर और डर के मारे चिंटू सोचने लगा, ''मैं कितना मूर्ख था। घमंड और चालाक होने के दिखावे ने मुझे मुश्किल में डाल दिया।''

उस दिन चिंटू ने सीखा कि मूर्खता और घमंड कभी भी फायदे नहीं देते। अब वह विनम्र और मददगार बन गया। वह दूसरों का सम्मान करने लगा और गाँव के बच्चों को भी यह सबक सिखाने लगा कि अहंकार और मूर्खता जीवन में नुकसान ही लाते हैं।

शिक्षा—घमंड और मूर्खता नुकसान देते हैं, विनम्रता और समझदारी जीवन में सफलता लाती हैं।

6. गिलहरी और पर्वत

एक ऊँचे और विशाल पर्वत पर एक छोटी सी गिलहरी रहती थी। पर्वत को अपनी ऊँचाई और विशालता पर बहुत घमंड था। वह अक्सर छोटी गिलहरी का मजाक उड़ाता था।

एक दिन पर्वत ने गिलहरी से कहा, ''अरे छोटी गिलहरी! तुम इतनी तुच्छ और छोटी हो। मेरा विस्तार देखो, मेरी ऊँचाई देखो! तुम मेरे सामने कुछ भी नहीं हो।''

गिलहरी ने विनम्रता से उत्तर दिया, ''महाराज पर्वत, यह सच है कि आप बहुत विशाल और ऊँचे हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं बेकार हूँ। मैं आपके जितना बड़ा नहीं हो सकती, और आप मेरे जितना छोटा नहीं हो सकते।''

पर्वत ने हँसते हुए कहा, ''तो क्या तुम खुद को मेरे बराबर समझती हो?''

गिलहरी ने जवाब दिया, ''नहीं, मैं खुद को आपके बराबर नहीं समझती, लेकिन मेरा भी अपना महत्व है। मैं छोटे-छोटे पेड़ों पर चढ़ सकती हूँ, नट तोड़ सकती हूँ और ऐसे काम कर सकती हूँ जो आप कभी नहीं कर सकते।''

इसके बाद गिलहरी ने एक महत्वपूर्ण बात कही, ''आप चाहे जितने भी विशाल हों, लेकिन आप खुद से हिल नहीं सकते। आपको अपनी जगह पर ही रहना पड़ता है। और अगर आप अपनी पीठ पर पेड़-पौधे और जीव-जंतुओं को सहारा न दें, तो आपकी विशालता का क्या फायदा? हर जीव, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, इस प्रकृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।''

पर्वत ने गिलहरी की बातें सुनीं और उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। उसे समझ आया कि हर किसी का अपना विशेष स्थान और महत्व होता है।

कहानी की सीख—हमें कभी भी किसी को उसके आकार या शक्ति के आधार पर छोटा नहीं समझना चाहिए। हर जीव का अपना महत्व होता है और सभी एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं।

24 अनुच्छेद-लेखन

1. वृक्ष हमारे मित्र

वृक्ष प्रकृति का अनमोल उपहार हैं और हमारे सच्चे मित्र हैं। वे हमें जीवित रहने के लिए ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और वातावरण से हानिकारक कार्बन डाइऑक्साइड को सोख लेते हैं। वृक्षों से हमें फल, फूल, औषधियाँ, लकड़ी और छाया प्राप्त होती है।

ये न केवल पर्यावरण को स्वच्छ रखते हैं, बल्कि वर्षा लाने और मिट्टी के कटाव को रोकने में भी सहायक होते हैं। पशु-पक्षियों के लिए वृक्ष ही उनका घर होते हैं। बिना वृक्षों के पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना असंभव है। अत: हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए और उनकी रक्षा करनी चाहिए। इसीलिए कहा जाता है, ''वृक्ष बचाओ, जीवन बचाओ!''

2. योग भगाए रोग

योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में योग का विशेष महत्व रहा है। नियमित रूप से योगासन और प्राणायाम करने से हमारा शरीर निरोग और मन शांत रहता है।

योग मधुमेह, उच्च रक्तचाप और तनाव जैसी आधुनिक बीमारियों को दूर भगाने में रामबाण सिद्ध होता है। यह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और शरीर में लचीलापन लाता है। यदि हम प्रतिदिन मात्र 30 मिनट योग को दें, तो हम दवाओं पर अपनी निर्भरता कम कर सकते हैं। स्वस्थ जीवन के लिए 'योग' को अपनाना आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

3. जल ही जीवन है

जल प्रकृति का सबसे अमूल्य संसाधन है, जिसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मनुष्य, पशु-पक्षी और पेड़-पौधे, सभी के अस्तित्व के लिए जल अनिवार्य है। हमारे शरीर का अधिकांश हिस्सा जल से बना है, जो स्वास्थ्य बनाए रखने में मदद करता है।

आज बढ़ती जनसंख्या और प्रदूषण के कारण शुद्ध जल का संकट गहराता जा रहा है। यदि हमने आज पानी की बर्बादी नहीं रोकी, तो भविष्य की पीढ़ियों के लिए बूँद-बूँद को तरसना पड़ेगा। हमें वर्षा जल संचयन अपनाना चाहिए और पानी का सदुपयोग करना चाहिए। याद रखें, ''जल है तो कल है।''

4. इंटरनेट: एक संचार क्रांति

इंटरनेट आधुनिक युग का वह चमत्कार है जिसने पूरी दुनिया को एक 'ग्लोबल विलेज' में बदल दिया है। यह संचार का सबसे तीव्र और सुलभ माध्यम है। आज इंटरनेट की मदद से हम दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से पल भर में वीडियो कॉल, ईमेल या सोशल मीडिया के जरिए जुड़ सकते हैं।

शिक्षा, व्यापार, बैंकिंग और मनोरंजन के क्षेत्र में इंटरनेट ने अभूतपूर्व क्रांति ला दी है। जहाँ पहले सूचनाएँ पहुँचने में दिनों लगते थे, अब वे एक क्लिक पर उपलब्ध हैं। हालाँकि, इसके अत्यधिक उपयोग से सावधान रहना भी जरूरी है। यदि सही ढंग से उपयोग किया जाए, तो इंटरनेट विकास का सबसे शक्तिशाली उपकरण है।

5. यदि मैं प्रधानमंत्री होता

यदि मैं देश का प्रधानमंत्री होता, तो मेरा मुख्य लक्ष्य भारत को एक शिक्षित, समृद्ध और सुरक्षित राष्ट्र बनाना होता। मैं सबसे पहले शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार करता ताकि हर गरीब बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और मुफ्त चिकित्सा मिल सके।

मैं भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने के लिए कड़े कानून बनाता और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करता। किसानों की खुशहाली के लिए आधुनिक तकनीक और सिंचाई की बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराना मेरी प्राथमिकता होती। मैं देश में सांप्रदायिक सद्भाव और एकता को बढ़ावा देता। मेरा सपना एक ऐसे भारत का होता जहाँ न्याय सबके लिए समान हो और हर नागरिक गर्व से सिर उठाकर जी सके।

6. गाँवों की दुर्दशा

भारत को 'गाँवों का देश' कहा जाता है, लेकिन आज हमारे गाँव कई समस्याओं से जूझ रहे हैं। गाँवों की दुर्दशा का सबसे बड़ा कारण वहाँ बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और रोजगार के अवसरों की कमी के कारण युवा तेजी से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं।

आज भी कई गाँवों में पक्की सड़कों, बिजली और शुद्ध पेयजल की भारी किल्लत है। कृषि, जो गाँवों की अर्थव्यवस्था का आधार है, अब घाटे का सौदा बनती जा रही है। गंदगी और जल निकासी की खराब व्यवस्था के कारण बीमारियाँ फैलती हैं। यदि हमें देश का वास्तविक विकास करना है, तो गाँवों की स्थिति सुधारनी होगी और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना होगा।

7. विद्यार्थी जीवन

विद्यार्थी जीवन मनुष्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल और स्वर्णिम आधारशिला है। यह वह समय है जब व्यक्ति के चरित्र, अनुशासन और व्यक्तित्व का निर्माण होता है। एक विद्यार्थी का मुख्य कर्तव्य ज्ञान अर्जित करना और अपने कौशल को विकसित करना है।

इस अवस्था में सीखी गई अच्छी आदतें और अनुशासन पूरे जीवन काम आते हैं। सादा जीवन और उच्च विचार विद्यार्थी जीवन के मूल मंत्र होने चाहिए। जहाँ यह समय आनंद और मित्रता से भरा होता है, वहीं यह कड़ी मेहनत और परीक्षाओं की चुनौती भी पेश करता है। जो विद्‌यार्थी समय का सदुपयोग करना सीख जाता है, सफलता उसके कदम चूमती है। वास्तव में, आज का अनुशासित विद्‌यार्थी ही कल का जिम्मेदार नागरिक बनता है।

8. साहस ही हमारी पहचान

साहस मनुष्य का वह गुण है जो उसे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी टूटने नहीं देता। साहस का अर्थ केवल डर का न होना नहीं है, बल्कि डर के बावजूद आगे बढ़ने का नाम साहस है। इतिहास गवाह है कि महान उपलब्धियाँ उन्हीं को मिली हैं जिन्होंने जोखिम उठाने का साहस दिखाया।

चाहे वह रानी लक्ष्मीबाई का युद्‌ध क्षेत्र हो या एक विद्‌यार्थी का अपनी असफलताओं से लड़ना, साहस ही हमारी असली पहचान बनता है। बिना साहस के ज्ञान और प्रतिभा भी व्यर्थ हो जाते हैं। जब हम चुनौतियों का सामना दृढ़ता से करते हैं, तो समाज में हमारा सम्मान बढ़ता है। अतः हमें अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनने और सत्य के मार्ग पर चलने का साहस हमेशा बनाए रखना चाहिए।

✤✤

25 निबन्ध लेखन

1. जल का महत्व

रूपरेखा— प्रस्तावना • जल का जीवन में स्थान • जल के विभिन्न स्रोत • जल का मानव जीवन में उपयोग • साहित्य में जल-महिमा का वर्णन • उपसंहार

प्रस्तावना— जल प्रकृति का अमूल्य वरदान है। जल पृथ्वी पर जीवन का आधार है। पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व जल के कारण ही संभव है। जल के बिना न मनुष्य जीवित रह सकता है और न ही पशु-पक्षी या वनस्पति। इसलिए जल को जीवन का आधार कहा गया है। यह न केवल हमारी शारीरिक आवश्यकता है, बल्कि हमारी सभ्यता और संस्कृति का मूल घटक भी है। प्रकृति का यह अनमोल उपहार बिना किसी भेदभाव

के सभी प्राणियों के लिए अमृततुल्य है।

जल का जीवन में स्थान— जीवन की कल्पना बिना जल के अधूरी है। मनुष्य के शरीर का लगभग सत्तर प्रतिशत भाग जल से बना होता है। जल शरीर और पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करता है और भोजन के पाचन में सहायता करता है। यह फसलों को हरा-भरा बनाता है और दैनिक जीवन का प्रत्येक कार्य जल पर निर्भर करता है।

जल के विभिन्न स्रोत— जल के प्रमुख स्रोत वर्षा, नदियाँ, झीलें, तालाब, कुएँ, नलकूप और समुद्र हैं। हिमालय से निकलने वाली नदियाँ और भूमिगत जल स्रोत हमें निरंतर जल प्रदान करते हैं। वर्षा जल से ही नदियाँ और भूजल भरते हैं। इसी कारण वर्षा को जीवनदायिनी कहा जाता है।

जल का मानव जीवन में उपयोग— जल का उपयोग पीने, भोजन पकाने, स्नान, सफाई, कृषि, उद्योग और विद्युत उत्पादन में किया जाता है। किसान सिंचाई के लिए जल पर निर्भर करता है, जिससे अन्न उत्पादन होता है। जल हमारी दैनिक दिनचर्या का अभिन्न अंग है।

साहित्य में जल-महिमा—भारतीय साहित्य में जल को पवित्र माना गया है। गंगा, यमुना जैसी नदियों को माता का दर्जा दिया गया है। कवियों ने जल को जीवन और शुद्धता का प्रतीक बताया है।

उपसंहार—जल हमारे लिए अमूल्य संपदा है। आज जल संकट एक गंभीर समस्या बन चुका है। अत: जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और जल का सही उपयोग करना हम सभी का कर्तव्य है। आने वाली पीढ़ियों के लिए जल बचाना हम सभी का नैतिक दायित्व है।

2. बाढ़ का दृश्य

रूपरेखा— • प्रस्तावना • बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र • बाढ़ से होने वाली जान-माल की क्षति • बचाव के उपाय • उपसंहार।

प्रस्तावना—पानी के अति प्रवाह के कारण बाढ़ आ सकती है। बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है जो अत्यधिक वर्षा या नदियों के उफान के कारण आती है। बाढ़ के समय जन-जीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो जाता है। बाढ़ में संपत्ति और पालतू जानवर भी डूब जाते हैं।

बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र—बाढ़ से अधिकतर नदी किनारे बसे गाँव और नगर प्रभावित होते हैं। खेत, मकान, सड़कें और पुल पानी में डूब जाते हैं। लोगों को ऊँचे स्थानों पर शरण लेनी पड़ती है। बाढ़ के कई दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं। इनमें अल्पकालिक रूप से जलजनित रोगों, जैसे मच्छरों द्वारा फैलने वाले रोगों का प्रसार मुख्य है।

जान-माल की क्षति— बाढ़ से फसलें नष्ट हो जाती हैं, जिससे किसानों को भारी नुकसान होता है। अनेक लोग बेघर हो जाते हैं और पशुओं की भी मृत्यु हो जाती है। संचार और यातायात व्यवस्था ठप हो जाती है।

बाढ़ के दुष्परिणाम—बाढ़ के बाद बीमारियाँ फैलने लगती हैं। गंदा पानी पीने से हैजा, मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियाँ फैलती हैं। पीने के पानी की कमी हो जाती है।

बचाव के उपाय—बाढ़ से बचाव के लिए तटबंधों का निर्माण, वृक्षारोपण और समय पर चेतावनी आवश्यक है। सरकार और प्रशासन को राहत कार्य तेजी से करने चाहिए।

उपसंहार—बाढ़ भले ही प्राकृतिक आपदा है, परंतु उचित प्रबंधन से इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है।

3. विद्यार्थी जीवन

रूपरेखा—• प्रस्तावना • विद्यार्थी का अधिकार • विद्यार्थी का कर्तव्य • उपसंहार।

प्रस्तावना— विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल होता है। यह काल केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है बल्कि एक समग्र विकास का सुअवसर है। इसी समय व्यक्ति का चरित्र और भविष्य दोनों का निर्माण होता है।

विद्यार्थी का अधिकार—विद्यार्थी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। उसे समान अवसर, उचित मार्गदर्शन और सुरक्षित वातावरण मिलना चाहिए ताकि वह अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके।

विद्यार्थी का कर्तव्य—विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह मन लगाकर पढ़ाई करे। समय का सही उपयोग करे और अनुशासन में रहे। माता-पिता और शिक्षकों का सम्मान करना भी उसका दायित्व है। विद्यार्थी को अपने जीवन को राष्ट्रहित में ढालने का प्रयास करना चाहिए।

समाज के प्रति दायित्व—एक आदर्श विद्यार्थी में अनेक गुणों का समावेश होना चाहिए। विद्यार्थी समाज का अभिन्न अंग है। उसे समाज के प्रति भी अपने दायित्वों का निर्वहन करना चाहिए। विद्यार्थी को समाज के नियमों का पालन करना चाहिए। उसे ईमानदारी, सच्चाई और सहयोग की भावना अपनानी चाहिए ताकि वह एक अच्छा नागरिक बन सके।

उपसंहार—जो विद्यार्थी अपने जीवन में परिश्रम और अनुशासन अपनाता है, वही आगे चलकर देश और समाज का गौरव बनता है।

4. स्वतंत्रता दिवस

रूपरेखा—• प्रस्तावना • स्वतंत्रता दिवस का आयोजन • स्वतंत्रता दिवस का महत्व • उपसंहार।

प्रस्तावना—भारत का स्वतंत्रता दिवस हर वर्ष 15 अगस्त को मनाया जाता है। स्वतंत्रता दिवस भारत का राष्ट्रीय पर्व है। यह दिन हमें हमारी आजादी की याद दिलाता है।

आयोजन—प्रतिवर्ष इस दिन 15 अगस्त को पूरे देश में ध्वजारोहण किया जाता है। भारत के प्रधानमंत्री दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हैं। विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं और देशभक्ति के गीत गाए जाते हैं।

स्वतंत्रता का महत्व—यह दिवस हमें स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान की याद दिलाता है। उनके संघर्ष के कारण ही हम आजाद भारत में साँस ले रहे हैं।

युवाओं की भूमिका—युवाओं को स्वतंत्रता का सही अर्थ समझना चाहिए और देश के विकास में योगदान देना चाहिए।

उपसंहार— स्वतंत्रता दिवस हमें अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों की भी याद दिलाता है।

5. होली

रूपरेखा— • प्रस्तावना • समय • कब से मनाया जाता है • मनाने का ढंग • दोष • उपसंहार

प्रस्तावना—होली भारत का प्रसिद्ध त्योहार है, जिसे रंगों का पर्व कहा जाता है। यह आनंद और प्रेम का प्रतीक है। पुराने गले-शिकवे भूलकर लोग एक-दूसरे पर रंग डालकर मनाते हैं।

समय—होली फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है। यह ऋतु परिवर्तन का संकेत भी देती है। गेहूँ और चने की फसलें पकने की ओर अग्रसर होती हैं जिससे किसान फसल को देखकर खुशी से प्रफुल्लित होता है।

कब से मनाया जाता है—होली का संबंध प्रह्लाद और होलिका की पौराणिक कथा से है। यह बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। हमें बड़े स्पष्ट तौर से बताता है कि जिसका ईश्वर रखवाला है, उसे मारने वाला कोई नहीं।

मनाने का ढंग—लोग एक-दूसरे को रंग लगाते हैं, मिठाइयाँ बाँटते हैं और खाते हैं और गीत-संगीत का आनंद लेते हैं। आपसी भेदभाव समाप्त हो जाता है। बुजुर्गों के चरण स्पर्श कर शुभाशीष लिया जाता है।

दोष—कुछ लोग होलिका दहन के लिए हरे पेड़ों को काटते हैं। कुछ सिरफिरे लोग शराब पीकर त्योहार के रंग को फीका कर देते हैं। कई लोग केमिकल रंगों और अनुचित व्यवहार का प्रयोग करते हैं, जो हानिकारक है। इससे बचना चाहिए।

उपसंहार—हमें होली का त्योहार पुरानी शिकायतों को भुलाकर साथ-साथ चलने का संदेश देता है। हमें होली को प्रेम, सौहार्द और सुरक्षित तरीके से मनाना चाहिए।

❖❖